AGRADIANCE

"To Reach the Good News to the Poor"

For Private Circulation Only

AGRA ARCHDIOCESAN NEWS LETTER MAY-JULY 2021

Our Lady of Rosary,
Pray for us!

Sacred Heart of Jesus,
Have mercy on us!

St. Thomas, Pray for us...

"मेरे प्रभु, मेरे ईश्वर!", संत थॉमस (पर्व दिवस-3 जुलाई)

Archdiocese at a glance

HCDP Programme by Fatima Hospital, Agra

Diaconate Br. Kulkanth 25th July

I Prof. & Jubilee, UMI, G. Noida

Congrates Sr. Ambrosia M.C.

Martha Sharma conferred 'Doctorate'

Thank you Fr. Amit, Outgoing RYD

His Grace blesses new ward, F. Hsp.

Yogi John Ferreira on Yoga Day

Young Faces chosen for Higher/Special studies

Fr. Alok Toppo Th. D., Bengalura

Fr. A. Maria Jude MSW, Assam

Fr. Preas Anthony - Special B.Ed.

Old Wine... new wineskins...

Fr. Dominic Pinto (LKO), RYD

Fr. W. Moras (LKO), Rector - SJRS

Fr. P. Philip (Bijnor), New Director-UKSVK

Editorial

प्रिय मित्रों, दो महीनों के लम्बे अन्तराल के बाद अग्रेडियन्स का मई-जून-जुलाई अंक आपके हाथों में है, हालाँकि मार्च-अप्रैल की प्रतियाँ भी बहुत-सी पल्लियों में नहीं पहुँची हैं, न ही वितरित की गई हैं।

काथलिक पंचांग में मई और जून दोनों महिने कुछ हटकर अपने आप में विशेष हैं। मई महीना माता मरियम की माला विनती को समर्पित है, जब घर-घर, चर्च प्रांगण में भक्तजन एकत्र होकर माता के आदर में माला जपते और मई माह की भक्ति करते हैं... हमारे कथीड्रल पल्ली में आज भी ऊपर और नीचे के मिशन कम्पाउण्डों (पादरी टोला) में ऐंजेलुस बजने के बाद बच्चे इकट्ठा होकर गिलास चम्मच बजाकर माला विनती शुरु होने की मुनादी करते हैं। रोज़री प्रार्थना पढ़ी जाती है, फिर मई महीने की किताब से हरेक दिन के लिए एक नियमित पाठ पढ़ा जाता है। प्रार्थना के अंत में हर दिन प्रसाद बाँटा जाता है। बीच-बीच में भण्डारे किये जाते हैं। अंतिम दिन वेदियाँ (माँ की डोलियाँ) सजाकर रतजगा (रात्रि जागरण) एवं अन्य प्रार्थनाएँ की जाती हैं... मैं समझता हूँ कि अन्य स्थानों पर भी लगभग ऐसा ही उत्सव मनाया जाता है।

जून महीना प्रभु येसु के पवित्रतम हृदय की भक्ति को नज़र (समर्पित) किया गया है। इस दौरान उसके पाक दिल की तस्वीर के आगे, स्तुति विनती, समर्पण प्रार्थना आदि की जाती है। छोटी-छोटी प्रार्थनाएं जैसे- हे येसु के पवित्र हृदय, हम पर दया कर, तेरा राज्य आए, हमारे हृदय को अपने हृदय के समान बना दे...आदि सिखाई-रटाई जाती हैं, जिन्हें हम सरलता से कंठस्थ करके अपने प्रतिदिन के जीवन का एक जरूरी हिस्सा बना लेते हैं।

ब्रदर जॉन बैपटिस्ट अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'बिकमिंग क्राइस्ट' में बताते हैं, कि बहुत से कम्युनिस्ट (नास्तिक) देशों जैसे- चीन, जापान आदि में कई शताब्दियों तक गिरजाघर बंद कर दिए गए थे, ऐसे में परिवार के मुखिया दादा-दादी/नाना-नानी अपने नौनिहालों को रोज़री सिखाते रहे, जिसके चलते विश्वास की श्रृंखला टूटी नहीं... समयान्तर में धर्म की विजय हुई, लोगों को प्रार्थना-पूजा की अनुमति मिल गई।

हम सबने कोरोना की दूसरी लहर के दंश को सहा है... अप्रैल-मई में यह एक भयावाह चक्रवात के समान आया और हमारे बहुत से प्रियजनों को अपने साथ ले गया, राजा हो या रंक, शहरी हो या ग्रामीण सभी काल के ग्रास बनते चले गए। धनाढ्य लोग पैसे लिए खड़े, गिड़गिड़ाते रह गए। न पैसा काम आया, न पद-प्रतिष्ठा। सारे अरमान धरे रह गए। यमराज ने किसी पर दया नहीं की। कितने लोगों को मेडिकल सुविधाएं नहीं मिलीं, वेण्टीलेटर्स और ऑक्सीजन गैस के अभाव में दम तोड़ दिया। मानवता सिसकती रह गई। छोटे-छोटे बच्चे बेसहारा हो गए। दादा-दादी, माता-पिता सभी साथ छोड़ गए।

बहुत भयावह समय गुज़ारा है हमने। भगवान न करे ऐसा वक्त कभी किसी की भी जिन्दगी में पुनः आए। हालांकि भगवान के तीसरे नेत्र के समान तीसरी लहर हमारे अपने देश, प्रदेश और जिलों में प्रवेश कर चुकी है। यदि हम अभी भी नहीं चेते तो, फिर पछताय क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत... जैसा कि अमूमन होता है, विदेशों में, जहाँ काफी समय से बारिश नहीं होती, वहाँ आप क्रिकेट मैच आयोजित कर दीजिए। मेघदूत प्रसन्न होकर झूम झूमकर बरसने लगते हैं, वैसे ही हमारे प्रदेश में कोरोना लगभग समाप्त हो गया है। मीडिया को धन्यवाद! वैसे भी अगले वर्ष यहाँ चुनाव होने हैं। चुनाव के आगे तो कोरोना भी दुम दबाकर भाग जाता है जनाब!

आगरा शहर में मसीही लोगों की संख्या अन्य महानगरों की तुलना में बहुत कम है। फिर भी हमने अप्रैल महीने में तोता का ताल और गोरों के कब्रिस्तान में 38 और मई 28 लोगों को पूर्ण विधि-विधान के अनुसार दफनाया है।

शेष पृष्ठ 4 पर

SHEPHERD'S VOICE

Devotion to Mary, the Mother of Jesus, is a distinguishing mark of Catholicism. The Church gives her special honour because her life was inseparably connected with that of Jesus our Lord and Saviour. Mary played a significant and unique role in the salvation accomplished by Jesus Christ. She gave her full consent to God's plan to save mankindwhen she said to the Archangel, "Here am I, the servant of the Lord; let it be with me accordingly to your word." (Lk 1:38)

Our Blessed Mother Mary remained always faithful to the "Yes" she said to the divine plan. All through her life she had to suffer much, but her greatest suffering was to stand at the foot of the Cross and watch Jesus die the most painful death. She made her own the redemptive suffering and sacrifice of Jesus. This is the foundation of the special veneration of Mary in the Catholic Church.

Traditionally the month of May is dedicated to the devotion to Mother Mary. May devotion began in Germany in the 18th Century and from there it spread to Italy and to the whole world. Different Popes have recommended this devotion. In his encyclical Mediator Dei (1947) Pope Pius XII recommended May devotion under spiritual exercises.

It is true that we honour Mother Mary through May devotion. But our main purpose is to thank and praise God our Father and the Lord Jesus Christ for the favours and blessings we have received through the intercession of our Blessed Mother.

Mary is not only the Mother of Jesus, but also our Mother. God the Father chose her not only to be the Mother of Jesus but also to be the Mother of all who believe in him. Jesus the Son of God in his dying moments turned to her and said: "Woman, behold your son", and to St. John: "Son, behold your mother." At this point Mary became Mother of all Christians.

As Cardinal Basil Hume once said, prayer to Mother Mary is part of the Christian instinct. It must be part of ours. It would be folly to neglect that prayer which has been said down the ages, the holy rosary. About holy rosary it has been said that it is an abridged life of Jesus and Mary. The faithful who pray the rosary always remain close to the Virgin Mary, and those who are close to her can only draw closer to her divine Son.

In the litany of our Lady there are three invocations dear to generations of Catholics. We call her"refuge of sinners", for, as a mother she has a forgiving heart; "comforter of the afflicted," for she knows how to be gentle and tender; "help of the sick," for she knows how

to spend herself in the service of one who has need. Surely if a Mother's heart is touched by suffering, it is only so because that is the way God is. God is always touched by human feelings, by human infirmity'Mary reflects that.

During the month of May, I pray that God may help us understand the greatness of our divine Mother, realize that rosary is the cure of the evils that affect our age. Let us pay true homage to our holy Mother by imitating her in our everyday life.

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

महाधर्माध्यक्ष का संदेश (हिन्दी अनुवाद)

मरियम, येशु की माता के प्रति भक्ति काथलिक विश्वास का एक विशेष भाग है। कलीसिया उनका विशेष आदर करती है, क्योंकि उनका जीवन येशु और मुक्तिदाता के जीवन से अद्‌भुत रूप से जुड़ा हुआ था। मरियम ने येशु ख्रीस्त द्वारा हमारे उद्धार की योजना में एक महत्वपूर्ण और अद्वितीय भूमिका निभायी है। जब ईश्वर ने मानवजाति को बचाने के लिए अपनी योजना में सहयोग करने के लिए ख्रीस्त को मरियम के पास भेजा तो उन्होंने अपनी पूर्ण सहमति और स्वीकृति दे दी। उन्होंने कहा, ''देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ। आपका कथन मुझमें पूरा हो जाए।'' (लूकस 1:38)

हमारी धन्य माता मरियम ने दैवीय योजना के लिए जो 'हाँ' कहा, उसके प्रति वह हमेशा ईमानदार रहीं। जीवन भर उन्होंने बहुत कष्ट सहा, किन्तु उनकी सबसे बड़ी वेदना थी, क्रूस के नीचे खड़े होकर अपने पुत्र को भयंकर वेदना में कष्टदायी मृत्यु को सहन करते हुए देखना। प्रभु की मुक्तिदायी पीड़ा और बलिदान को उन्होंने अपना मानकर स्वीकार किया। यही काथलिक कलीसिया में मरियम के प्रति विशेष भक्ति का आधार है।

पारंपरिक रूप से मई महीना माता मरियम की भक्ति के लिए समर्पित है। मई महीने की भक्ति 18वीं शताब्दी में जर्मनी देश में प्रारम्भ हुई और वहाँ से इटली देश और फिर पूरे विश्व में फैल गई। समय-समय पर विभिन्न संत पिताओं ने इस भक्ति का समर्थन करके इसे बढ़ावा दिया है। संत पिता पियुस बारहवें ने अपने सार्वभौमिक प्रपत्र मीडिएटर देई (1947) में मई महीने की भक्ति की आध्यात्मिक साधना के रूप में सिफारिश की है।

यह सत्य है कि हम मरिया भक्ति के द्वारा माता मरियम को आदर-सम्मान देते हैं; किन्तु हमारा मुख्य उद्‌देश्य हमारे पिता ईश्वर और प्रभु येसु को धन्यवाद देना, उनकी स्तुति-आराधना करना है, उन सभी आशिषों और कृपाओं के लिए जो हमें धन्य माता की मध्यस्थता से मिली हैं।

मरियम केवल येसु की माँ नहीं हैं, किन्तु हमारी भी माँ हैं। पिता ईश्वर ने उन्हें चुन लिया, न केवल येसु की माँ बनने के लिए, बल्कि हम सबकी भी माँ बनने के लिए, जो उसमें विश्वास करते हैं। येसु ने क्रूस पर मरते समय अपनी माता की ओर मुड़कर कहा था, ''भद्रे! यह है तुम्हारा पुत्र!'' फिर संत योहन की ओर देखकर कहा, ''पुत्र! यह है तुम्हारी माता।'' उसी समय से मरियम सभी मसीहियों की माँ बन गईं।

जिस प्रकार एक बार कार्डिनल बेसिल हयूम ने कहा था, कि 'मरियम से प्रार्थना (मध्यस्थता) करना ख्रीस्तीय स्वाभाविकता का एक हिस्सा है। यह हमारी स्वाभाविकता का हिस्सा भी होना (बनना) चाहिए। यह हमारी मूर्खता (नासमझी) ही कहलायेगी, यदि हम सदियों

से कही (जपी) जाने वाली प्रार्थना अर्थात् माला विनती को नकार दें, या त्याग दें। माला विनती प्रार्थना के बारे में कहा जाता है, कि यह येसु-मरियम का संक्षिप्त जीवन है। अर्थात् रोज़री प्रार्थना में उन दोनों का संक्षिप्त जीवन निहित है। ऐसे विश्वासी जो माला विनती जपते और माता मरियम का आदर करते हैं, कुँवारी मरियम के निकट रहते हैं, और जो उसके नजदीक रहते हैं, वे उसके दैवीय पुत्र के निकट आ जाते हैं।

माता मरियम की स्तुति विनती में तीन जाप (शीर्षक) ऐसे हैं, जो सदियों से काथलिकों को प्रिय हैं। हम उसे 'पापियों की शरण' के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि उनके पास एक क्षमा करने वाला दिल है, वह 'दु:खियों की सांत्वना' हैं, क्योंकि वह विनम्र और दयालु हैं; मरिया 'बीमारों का स्वास्थ्य' है क्योंकि वह दूसरों (जरूरतमंदों) की सेवा करना जानती है। वह यह जानती हैं कि हम स्वयं को दूसरों की सेवा-सुश्रुषा में कैसे लगा-खपा सकते हैं।

निश्चय ही यदि माँ का हृदय दु:ख-दर्द से व्यथित होता है, तो सिर्फ इसलिए, क्योंकि ईश्वर स्वयं इसी प्रकार व्यवहार करता है। ईश्वर सदा ही मानवीय भावनाओं, मानवीय कमजोरियों से व्यथित होता है। मरियम इस बात को प्रतिबिम्बित (प्रकट) करती हैं।

मई महीने में मेरी प्रार्थना है कि ईश्वर हमारी सहायता करे, कि हम अपनी दैवीय माता की महानता को समझा सकें। हमें इस बात की अनुभूति/अनुभव हो जाए, कि वर्तमान समय सभी बुराइयों का इलाज रोज़री प्रार्थना है। हम अपने दैनिक जीवन में उसका अनुसरण करके उसे सच्ची श्रद्धांजलि और आदर-सम्मान दें।

प्रभु में आपका,

✠ **राफी मंजलि**
आगरा के महाधर्माध्यक्ष

उसी तरह मार्टर्स सिमिट्री (निकट भगवान सिनेमा) में भी दोनों महीनों में लगभग 12 लोगों को सुपुर्दे-खाक किया गया। इस दौरान हमारे कुछ गैर कैथोलिक पासवानों (पुरोहितों) ने अपने परिवार या स्वयं की भी परवाह न करते हुए मृतकों की दफन क्रिया सम्पन्न कराई। हम उन्हें सलाम करते हैं।

हमारे आगरा धर्मप्रांत में बहुत से विश्वासियों और कुछ धर्मबहनों को कोरोना ने हमसे असमय छीन लिया। हम उनकी आत्मशांति के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हैं। इस कोरोना काल में भी हमारे कोरोना वॉलण्टियर्स फादर शिबु और फादर सेबास्टियन कुल्लीथानम ने अद्भुत साहस और अपनी पुरोहितिक बुलाहट का परिचय देते हुए निर्धनों को राशन-दवाई उपलब्ध कराई। फादर सेबास्टियन ने तो अपना पूरा अस्पताल (नेऊस) और घर कोविड मरीजों के लिए खोल दिया। प्रभु उन्हें आशीष दे और स्वस्थ रखे। दूसरी और कुछ लोग अपने घरों-दफ्तरों में जमे रहे... जिन्दगी सबको प्यारी है साहब! जिन्दा रहे तो सेवा बाद में भी कर लेंगे!!

हमारे क्षेत्रीय युवा निर्देशक फादर डॉमिनिक जॉर्ज अपना कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न कर रहे हैं। उनके स्थान पर लखनऊ के फादर डॉमिनिक पिण्टो नए निर्देशक बने हैं। इसी श्रृंखला में सेंट जोज़फ प्रान्तीय गुरुकुल, प्रयागराज के गुरुकुलाचार्य श्रद्धेय फादर रोनाल्ड टेलिस के स्थान पर नए गुरुकुलाचार्य श्रद्धेय फादर विल्फ्रेड मोरस को नियुक्त किया गया है। यू.के.एस.वी.के. (उत्तर क्षेत्रीय समाज विकास केन्द्र) के प्रान्तीय निर्देशक फादर एन्थोनी फर्नांडिज़ की जगह नए निदेशक फादर पायस (बिजनौर धर्मप्रांत) ने कार्यभार संभाल लिया है। तीनों नवनियुक्त अधिकारियों को **अग्रेडियन्स** की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रभु में आपका,

फादर यूजिन मून लाज़रस (कृते, अग्रेडियन्स परिवार)

THE ARCHDIOCESE OF AGRA

Most Rev. Dr. Raphy Manjaly
Archbishop of Agra

CATHEDRAL HOUSE
WAZIRPURA ROAD
AGRA - 282 003 U.P. (INDIA)
: (O) (0562) 2851318, 2526397
: (P) (0562) 2527208
: archdagra@gmail.com

Transfers and appointments become effective within five weeks of the annoucement. Handing over or taking over of charge is to be completed latest by the 6th of August 2021.

S.N.	Name	From Where	To Where
01	Rev. Fr. John D'Cunha	Sabbatical Leave	Priest-in-charge, Surajpur-Greater Noida West Zone, Residence at KNEUS, Greater Noida
02	Rev. Fr. Raphy Vallachira	Parish Priest, St. Xavier's Church, Etah	Parish Priest, Sts. Simon & Jude Church, Kaulakha, Agra
03	Rev. Fr. Elias Correia	Parish Priest, St. Peter's & Principal, St. Peter's Sr. Sec. School, Bharatpur	Principal, St. Fidelis Sr. Sec. School, Aligarh
04	Rev. Fr. Sunny Kottoor	Principal, St. Fidelis Sr. Sec. School, Aligarh	Parish Priest, St. Francis Church & Principal, St. Francis' Inter College, Hathras
05	Rev. Fr. Mathew Thundiyil	Principal, St. Dominic's Sr. Sec. School, Mathura	Parish Priest, St. Peter's Church & Principal, St. Peter's Sr. Sec. School, Bharatpur
06	Rev. Fr. Robert Varghese	Parish Priest, St. Francis & Principal, St. Francis' Inter College, Hathras	Parish Priest, St. Joseph's Church & Principal, St. Joseph's Sr. Sec. School, Kasganj
07	Rev. Fr. Peter Parkhe	Parish Priest, St. Joseph's, Principal, St. Joseph's Sr. Sec. School, Kasganj	Principal, St. Dominic's Sr. Sec. School, Mathura
08	Rev. Fr. Cyril Prakash Moras	Fatima Mission, Ajaynagar, Mathura	Priest in Residence, St. Gonzalo Garcia Niwas, Bulandshahr (To attend Renewal Courses)
09	Rev. Fr. Pasala Joseph Kumar	Secretary to the Archbishop of Agra, Cathedral House, Agra	Asst., Holy Family Church & Christ the King Inter College, Tundla
10	Rev. Fr. Arul Lazar	Asst., Cathedral of Immaculate Conception, Agra	Parish Priest, St. Xavier's Church, Etah.
11	Rev. Fr. Tony D'Almeida	Asst., Holy Family Church & Christ the King Inter College, Tundla	Asst., St. Peter's Church & St. Peter's Sr. Sec. School, Bharatpur

12	Rev. Fr. Alok Toppo	Professor, St. Joseph's Reg. Seminary, Allahabad	Doctoral Studies at Dharmaram Vidya Kshetram, Bengaluru
13	Rev. Fr. Vineesh Joseph	Asst., St. Fidelis' Church, Ramghat Road, Aligarh	Priest-in-charge, Fatima Mission, Ajaynagar
14	Rev. Fr. Lawrence Raja	Asst., Cathedral of Immaculate Conception, Agra	Administrator, Archbishop's House & Vianney Home
15	Rev. Fr. Charles Toppo	Asst., Nishkalanka Mata Church & School, Jait	Asst., St. Fidelis Church, Ramghat Road, Aligarh
16	Rev. Fr. Preas Anthony	Asst., St. Theresa's Mission, Kosi Kalan	Studies: Special B. Ed.
17	Rev. Fr. Anthony Maria Jude	Asst., St. Fidelis Sr. Sec. School, Aligarh	Studies: MSW at Assam Don Bosco University, Assam
18	Rev. Fr. Viniversal D'Souza	Asst., St. Peter's Church & St. Peter's Sr. Sec. School, Bharatpur	Asst., Cathedral of Immaculate Conception, Agra
19	Rev. Fr. Saroj Kr. Nayak	Asst., Rosary Church & St. Joseph's School, Bastar	Asst., Sacred Heart Church, Mathura. Residence at St. Mother Teresa's Seva Niketan, Adukki
20	Rev. Fr. J. Jemilthan	Asst., St. Fidelis Church, Aligarh	Secretary to the Archbishop of Agra, Cathedral House, Agra

Deacons:

Rev. Dn. Justin Augustin - St. Joseph's Mission, Gohanpur, Mathura
Bro. Kulkant Chhinchani - Rosary Mission, Bastar

Regents:

1. Bro. Suman Toppo - Savio Navjeevan Bal Bhawan, Aligarh
2. Bro. Jeevan Prakash Machado - Savio Navjeevan Bal Bhawan, Aligarh
3. Bro. Satish Kerketta - Nishkalanka Mata Mission, Jaith (Mathura)
4. Bro. Swapnil Dabre - St. Theresa's Mission, Kosi Kalan (Mathura)

With best wishes and assurance of prayers,

Yours fraternally,

✠ **Raphy Manjaly**
(Archbishop of Agra)

Solemnity of St. Thomas, the Apostle of India

Soon we will celebrate the solemnity of St. Thomas, the Apostle of India. I wish each of you, particularly those who are celebrating their patronal feast, a very Happy Feast. It is a good occasion for us to thank God for the gift of faith that has come to us through the preaching of the Apostles. It is also a time to be renewed in faith and to be doing the works of faith.

Apostle Thomas gave a glimpse of his courage and love for the Master when he said, "Let us also go and die with him" (Jn 11:16). His statement, "Lord, we do not know where you are going; how can we know the way" (Jn 14:5) reveals that he is an honest and frank person. The same straight- forwardness is seen when he tells his companions, "Until I have seen in his hands the print of the nails and put my finger in the mark of the nails and my hand in his side, I will not believe" (Jn 20:25).

Surely, Thomas loved Jesus. But Jesus' love for Thomas was far superior. Jesus knew the longing of Thomas' heart. That might well be the reason why the risen Lord invited him to touch the mark of the wounds and be a believer.

How did the Apostle touch the mark of the wounds of the risen Lord? Let me answer that by quoting a story from the Acts of Thomas. King Gundaphorus was looking for a master carpenter to construct the royal palace. An official named Abban introduced Thomas to the king. The king commissioned Thomas to build his palace and gave him a substantial amount of money which he distributed among the poor. To the King's question, "Have you finished my mansion yet? And when can we go and see it?", Thomas' answer was: "You cannot see it now, but when you depart from this life you shall see it."

Thomas must have seen with the eyes of his mind the picture Jesus drew of the last judgment: "The king will say..... 'Come, blessed of my Father! Take possession of the kingdom prepared for you For I was hungry and you fed me. I was thirsty and you gave me to drink".

What must you and I do to touch the wounds of the Risen Lord and to acquire that saving faith?

According to Samuel Rayan, SJ, the faith that saves consists not so much in saying 'Lord, Lord' as in concrete commitment to mercy and justice, in sincere service rendered to the life and liberation of peoples. The poor are the crucified of history with whom the crucified of Calvary has established an intimate identity. To touch the poor is to touch Jesus Christ.

The Samaritan's saving faith consisted not merely in saying prayers or performing rituals, but in caringly touching and dressing the wounds of the man left dying on the roadside.

The wounds of the downtrodden and marginalized are the wounds of Jesus. Through them he extends an invitation to you and me: "Put your finger here and see my hands. Resist no longer and be a believer". Then he expects us to respond: "You are my Jesus, you are my Lord." Amen.

Dr. Raphy Manjaly
(Archbishop of Agra)

Priesthood is a call to a life of Authentic Discipleship of Christ

A talk given by Most Rev. Dr. Raphy Manjaly (Archbishop of Agra) on the occasion of Priestly Monthly Recollection, on Chrism Mass day.

1. A deep personal love and devotion to Jesus

To be a priest is to be a radical disciple of Jesus. What does it mean to be disciple of Jesus?

This word - mathetes (disciple) / or its derivative is used roughly 260 times in the gospels and akoloutheo (to follow one who precedes) 90 times of which 35 times used in the religious sense.

Analyzing the call and mission texts from the sacred scriptures, we come to three significant characteristics of the vocation to discipleship. They are called by Jesus. They responded by remaining with Jesus. He sent them out to proclaim the message.

The Call: the call to discipleship is a grace, a gift. Priesthood is a grace, a gift. We priests are human beings who are weak, frail and fallible. We are sinners yet called to be companions, friends, and priests of Jesus Christ. "We have this treasure in earthen vessel... 2 Cor 4:7ff. To receive this gift, we need faith. "Lord, I do not seek to understand in order to believe but believe in order to understand. For I believe even this that I shall not understand unless I believe". St. Anselm. "That Christ may dwell in your hearts through faith... Eph 3:17-19. We accept this gift with great humility and gratitude. Priesthood is also a grave responsibility. It is not a source of up-word social-and financial mobility, position, status and power.

Priesthood is a call to be with Jesus: Discipleship requires a personal experience of Jesus and a living relationship with him.

What do you say that I am? (Mk8: 27-33) or with Paul we ask, who are you Lord? (Act 9:5) or do you love me more than these? (Jn 21:15-17) Who is Jesus for me? Is Jesus real and personal to me? Is he someone to me? Is he the definition of my life? Do I take Jesus seriously? The answer to these questions must come from my heart and from my life.

Disciple is the one who has personally encountered / experienced Jesus Christ. As a result of which he develops an intense and intimate relationship with him. This relationship is spelt out in Mk "to be with" 20 times, Johnine "to abide in or remain" (Mt 3, Mk2, Lk7, Jn 40, Acts 13, Paul 17, Heb 6, Johnine letters 27, " rest 3) is used 118 times. Paul often uses "in Christ" to describe this relationship.

This deep and personal relationship is indicated in the Gospels by the use of verbs "see" "hear" "touch". What matters is Christ interiorly felt, touched and seen and heard. The call to be a priest is a call to deep intimacy with Jesus that gives meaning and joy to us as priests. It is the foundation and wellspring of our life and mission. Intimacy with Jesus helps us to face loneliness, struggle and pains. Just as intimacy with the Father helped Jesus face opposition, rejection, suffering and death. Without this life-sustaining relationship we will soon dry up and

wither away. If Jesus is sidelined, ignored, taken for granted and not taken seriously, then money, alcohol, position and power tend to step in as compensation and substitution. Therefore the need of the hour is return to Jesus.

Apostles, disciples and some women had a profound experience of the risen Lord. "What we proclaim is that we have heard and seen and looked up and touched with our hands." Jn 1:1-4.

Let us listen to St. Paul's personal experience of the risen Lord.

"But whatever gain I had, I counted as loss for the sake of Christ. Indeed, I count everything as loss because of the surpassing worth of knowing Christ Jesus my Lord. For his sake I have suffered the loss of all things, and count them as refuse, in order that I might gain Christ and be found in him, not having a righteousness of my own based on low, but that which is through faith in Christ." Phil 3:7-11.

"For I through the law died to the law that I might live to God. I have been crucified with Christ. It is not longer I who live, but Christ lives in me, and the life I now live in the flesh I live by faith in the Son of God who loved me and gave himself up for me" Gal 2:19-20.

"Neither death nor life, nor angels, nor principalities, nor things present, nor things to come, nor powers, nor height, nor death, nor anything else in all creation, will be able to separate us from the love of God in Christ Jesus our Lord" Rom 8:38-39.

To live is Christ Phil 1:1-21

Pedro Aruppe was asked, "For you who is Jesus Christ?" "For me Jesus Christ is everything. He is my All. Take Jesus Christ from my life and everything would collapse" 'after ten years when he was asked the same question, he repeated the same answer.

Mother Teresa: "Jesus is all everything to me. I am only His, His own little one, for all eternity. I am a little spouse of Jesus crucified - alone, naked bleeding, suffering, dying on the cross Jesus I have never refuse you anything." (Private vow that she kept for 55 years)

"A missionary who has no deep experience of God in prayer and contemplation will have little influence or missionary success. EA 23.

Where do we meet Christ today?

Gospels: Mt. Learn from Jesus. Lk - walk with Jesus, Mk - suffered with Jesus. Jn - surrender and be committed to Jesus.

Eucharist: Christ is present in the Eucharist. He is there as my friend and my ideal, my model, my consoler, my strength, my way and my companion.

"The Eucharist is the source of my happiness. For me, saying Mass is not a rule or a part of the time table. It is an experience. I would never want to miss it. It is a meeting with the Lord. This meeting keeps me happy all through the day" - Fr. Arokia Das - Professor at Arul Kadal, Madras University and JDV Professor.

"May the Eucharist invade my whole life. May it be a sacrament of my life-of my life received, of my life lived, of my life surrendered "Teilhard Dee Chardin - Devine Milieu. Priesthood is nourished and nurtured by the Eucharist. If a priest does not have a real love for the Eucharist, he will not bear much fruit.

The Poor and the Suffering: For me same Christ is present and alive in the poor and suffering. They are the vicars of Christ. Whatever you do to them, we do it for Christ. Pope John 23rd: "if we love the poor and take care of them, the Lord will surely take care of us."

Prayerful contemplation of the gospels, meaningful celebration of the Eucharist and

solidarity with the poor gives joy and meaning to our lives as priests.

2. Priests are called to be Christ-like (Sacraments of Christ)

Jesus is not only the Lord to be adored but essentially the WAY to be followed. Christianity is a way of life. In the early church Christianity was called the way -Act. 9:12, 22-4, 24:14, 19:9, 23, 24:22.:14, The ultimate test of Christianity is our life, our way of living the Gospels. The real and effective way to preach the gospel is to live the gospel. What I really believe is seen how I live, not in what I say or preach.

As priests we are called to live as Jesus lived and taught. We are called to imitate Jesus portrayed by the gospels as the normative model who proposes his way of life. The Jesus of the Gospel is seen and experienced as one who is poor and humble. Son who is sent by the Father in mission. The servant who is obedient to his father, Christ of the kenosis, Christ of the beatitudes, and Christ of the cross.

We are called to live our priesthood through Christ-like attitudes, values, deeds and relationships. We try to live the sermon on the mount, the very core and the quintessence of Jesus teaching.

To be Christ like; a person of deep prayer: Jesus prayed particularly at the decisive moments of his life. He was constantly in communion with his Abba. Jesus had a perfound experience of God as Abba - Reverence and intimacy are mingled. Jesus Abba experience should become ours. Do I pray? How much time do I spend in personal prayer? (How much time do I spend with my mobile?) I can't be happy as a priest if I neglect my personal prayer.

To be Christ like: Compassionate: We are called to be compassionate towards the poor, the sick and the sinners. Today this compassion is dying out in our media and market centered society. In today's culture of greed, selfishness and individualism, we need to be men of deep compassion and sharing. Jesus was God's compassion made human. Am I a compassionate person? Do I feel the pain of others? Am I cold, indifferent, insensitive and lethargic?

To be Christ like: Forgiving: forgiveness heals, reconciles and brings peace. "When someone speaks ill of me, I pray extra for that person" (Priest). But another priest says "I prefer to go to hell, than to talk to that priest". Is there hatred, bitterness in my heart? Do I forgive? Jesus I want to learn how you forgave your enemies on the cross.

To be Christ like: men for others: people come first, not my pleasure and comforts. Being with the people, close to them, priests spend their whole life in service without fuss and fanfare. This requires great humility. Am I humble? Let us remember that humility lows from the fullness and pride flows from emptiness. He loves his people so deeply and so sincerely that he can say "This is my body broken for you. This is my blood shed for you". This is the meaning of the Eucharist to become bread broken for others so that others may have life, life in abundance. Priests are called to be Eucharistic Persons.

To be Christ like: all inclusive: Jesus crossed all kinds of boundaries. He was all inclusive. Like Christ, priest has to have a large heart and a wide horizon to include everyone. He has to go beyond narrow identities based on caste, ethnicity, language, north-south divide. If a priest using these for selfish gains, to manipulate others, to get them on this side he can't be a priest of Jesus.

To be Christ like: Relating to People: pastoral life is full of relationship. It is not only what we do how we relate to people is very crucial. The effectiveness of our ministry is determined by the quality of our relationships. In relating to the people of deferent categories, Jesus is our model, our way. How did Jesus relate to the people of his time? Lord teach me your way of relating to -disciples, to sinners, to children, to Pharisees, Palates and Herods. Teach me how you dealt with your disciples especially with Peter, with John, with traitor Judas? How delicately you treat them on Lake Tiberious, even preparing breakfast for them! How washed their feet. Jesus teach me your way of looking at people, as you glance at Peter after his denial, as you penetrated the heart of rich young man, your dialogue with the Samaritan woman and your tenderness towards the adulterous woman. How do I look at people determines the way we deal or treat them. Look at people as Jesus looked at people.

The scribes, Pharisees and elder saw tax collectors, publicans, and prostitutes, those who did not keep the law saw them as sinners, unclean, impure and so guilty. So they judged, condemned and accused them. But Jesus saw these very people sick and lost (wounded broken and insecure). Jesus did not blame them but healed them. He didn't condemn them but offered them forgiveness. He did not judge them but challenged them.

To be Christ like: Accepting the Paschal Mystery: The way of Jesus is the way of the cross. Jesus' entire life was one of conflict, (struggle) beginning from birth till death on the cross. He struggled against both Satan and Mammon and remained loyal to his Abba and his mission till the end. What truly matters is not position or power, not money or possessions, not visible achievement of influential friends, not comforts and easy escapes but fidelity to Jesus and his mission. As disciples of Jesus we have to accept the paschal mystery, that is struggles, pain, misunderstanding etc. suffering is part of our life. Priesthood and cross go together. Do I run away from the pains and struggles in my life? Do I opt for soft life, what is easier and comfortable and escape the hard demands of the gospel?

Priest is a sign of Hope: Hope is a great gift a Priest brings to the humanity. It is rooted in the resurrection of crucified Jesus. Hope is vital for each one of us. Without hope we die. It is hope that gives meaning to our struggles and pains. Therefore a priest does not give up on himself or on others or he does not become cynical nothing can be done, it is useless. He / she is beyond redemption. No, there is a way out. Jesus will not fail us if we truly trust in him.

Dear Jesus, Teach us your way so that it becomes our way, so that we become your real disciples, your priests, collaborating in the work of redemption.

Of Your Charity

Please pray for the souls of the following missionaries, who while working in the Archdiocese of Agra succumbed to untimely death due to COVID-19 in recent time. They are gone but not forgotten.

Rev. Fr. Varghese Kottoor, CMI (01.10.2020)
Rev. Fr. Thomas Emprayil ,VC (08.05.21)
Rev. Fr. Kripa George, CHF (27.04.21)
Rev. Sr. Merly Jose Villuviruthil,CMC (16.05.21)

May their souls and souls of all the faithful departed, through the mercy of God rest in peace. Amen.

पवित्र आत्मा - सच्चा मित्र

''आत्मा भी हमारी दुर्बलता में हमारी सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसे आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिए विनती करता है।'' (रोमियो 8:26)

प्रभु येसु के स्वर्गारोहण के बाद शिष्य भय से भरे, दिशाहीन और निराश थे, प्रभु का वचन हमें बताता है कि वह स्वयं को कमरे में बंद करके प्रार्थना में लगे रहते थे कि उन्हें क्या करना है और कैसे? पेन्तेकोस्त के दिन जब पवित्र आत्मा पहली बार शिष्यों पर उतरा, उस दिन भी वे सब प्रार्थना कर रहे थे। ये वही शिष्य थे जो येसु के दो बार कहने पर भी गेथसेमनी में घंटा भर भी जाग कर प्रार्थना नहीं कर पाये थे। परन्तु स्वर्गारोहण के बाद वह निरंतर प्रार्थना में लगे रहे, शायद तब भी वह नहीं जानते थे कि उन्हें किस तरह प्रार्थना करनी चाहिए, परन्तु अपने स्वर्गारोहण के बाद प्रभु येसु ने अपने आत्मा को उनके लिए भेजा, पेन्तेकोस्त के दिन भी शिष्यों की प्रार्थना के साथ आत्मा स्वयं आहें भरकर उनके लिए प्रार्थना कर रहा था। पेन्तेकोस्त के दिन पहली बार शिष्यों को आत्मा का अभिषेक मिला और उस दिन ही कलीसिया का जन्म हुआ।

पवित्र शास्त्र उत्पत्ति ग्रंथ में हमें बताता है, कि सृष्टि की रचना से पहले प्रभु का आत्मा जल पर छाया रहता था, वो सनातन आत्मा जो सृष्टि से पहले विद्यमान था उसी में और उसी से सब कुछ की सृष्टि हुई, अपने दु:खभोग, क्रूस मरण के द्वारा जो मुक्ति प्रभु येसु ने हमें दी वह सिर्फ एक काल विशेष की घटना मात्र बनकर न रह जाये, इसलिए आवश्यक था कि सुसमाचार द्वारा राष्ट्रों को प्रभु का आह्वान पहुँचाया जाये, प्रभु ने फिर उसी आत्मा को भेजकर कलीसिया की स्थापना की। शिष्यों को वह सामर्थ्य, दिशा-निर्देश और अद्‌भुत कृपा दी कि वे संसार के कोने-कोने में उस मुक्ति संदेश को फैला सकें। अनगिनत बाधाओं, कष्टों, संकटों, अभावों के बावजूद भी यदि यह मिशन कार्य आज भी जारी है तो सिर्फ पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और कृपा से।

पवित्र आत्मा हमारा सच्चा मित्र है। वह आज भी हमारी अस्पष्ट आहों को समझकर हमारे लिए विनती करता है। पेन्तेकोस्त सिर्फ एक त्योहार का दिन नहीं वरन् यह हमें याद दिलाता है कि वास्तव में प्रभु येसु ने अपना वादा पूरा किया और हमें अनाथ नहीं छोड़ा है।

हम में से प्रत्येक विश्वासी को आज उसी पवित्र आत्मा की जरूरत है। प्रभु के आत्मा के बिना हमारा ख्रीस्तीय जीवन अधूरा था, या यह कहें कि अधूरा है। पवित्र आत्मा ही हमारे ख्रीस्तीय जीवन को उन ईश्वरीय वरदानों से भरते हैं, जिनके बिना पिता ईश्वर को लुभाना असम्भव है। आज जब पूरा विश्व, हमारा देश कठिन परिस्थितियों से गुज़र रहा है। तब पवित्र आत्मा का साथ होना आवश्यक है। वह ही हमें सिखाते हैं इन विकट परिस्थितियों में हम कैसे एक ख्रीस्तीय जीवन जी सकते हैं, वह ही हमारे अंदर उस आशा का संचार करते हैं।

पवित्र आत्मा ही हमें हर परेशानी, प्रतिकूल परिस्थितियों में ऊर्जावान बनाते हैं, पवित्र आत्मा ही हमें उन स्वर्गीय वरदानों से भरते हैं जिनके बिना आज जीना मुश्किल है। हमें जरूरत है तो सिर्फ पवित्र आत्मा को अपने जीवन, अपने परिवारों, अपनी कलीसिया में स्वागत करने की, खुद को पवित्र बनाये रखने की, निरंतर प्रार्थना में लगे रहने की और जैसा कि प्रभु येसु ने स्वयं कहा है, ''पिता ईश्वर माँगने वालों को पवित्र आत्मा क्यों नहीं देगा?''

समर्पण के साथ माँगने पर पिता ईश्वर हमें अपना वो पवित्र आत्मा जरूर प्रदान करेंगे। आइए, हे पावन आत्मा! हमें अपने योग्य बना दीजिए। आमेन।

—डॉ. डेज़ी, आर.सी. मिशन कम्पाउण्ड, आगरा

STOP taking LIFE for GRANTED!

The other day, I got a shocking news that one of my University professors, whom we fondly called 'Kaushik Sir', was infected with Covid and he was on ventilator. And the very next day, heard that he was no more! It was only then, that I checked back into his WhatsApp contact on my mobile, to see, as to when he had stopped messaging me, for he was one of those caring souls who kept sending best wishes and motivational messages daily, though I seldom checked them, and never replied! I found that his last message to me was at this Easter! I frantically began calling him up, though I knew that now the possibility of his attending my call was absolutely zero! ***The owner of this phone number had gone away beyond my time and space zones!***

Amid my shock and sorrow, I vividly recalled the noble soul that he was, always greeting people with a warm smile, his genuine desire to help others in all possible ways, without any selfish pursuits of his own and his delight in sharing his rich treasure of knowledge with his students! But above all, and what stood out the most, was, the way he loved and cared for those in his circle of contact.**The memories he imprinted on the heart of life brought me to reflect on what matters most in my own, what am I giving my energy to and where am I giving it away.**

A little over a week after his passing, he came in my dream. As I sat, he stood in front of me, smiling, with a simple gesture of kindness, genuine care and compassion. I asked him the only question I could think of at that moment,***"Sir, do you miss anything about being here (in the physical world)?"*** In hindsight, it was probably the best question I could have asked, because when we answer the question of what we would miss most if we were no longer here, we ultimately discover **what's most important.** And in doing so, we naturally are led to focusing our energy on the right things to lead us to a life of more meaning.

His reply was simple and clear. With a confident and peaceful tone, he said, ***"The only things I miss are those who were in my life."*** He expressed how he would miss physically being here with loved ones, sharing moments and laughter and helping people out. That to be physically here is unlike anything else and a time to be cherished and fully lived.

So, the question is, **"What is most important?"** Harvard research studies says that it is our relationships in life that lead us to the greatest happiness and meaning. Love is at the heart of this. **At the end of the day, it is our connection with our daughters, sons, friends, relatives, spouses, partners, students and colleagues.**

In post-modern times of today, we have been so frantically busy shooting deadlines, achieving targets, keeping pace with fastest changing technicalities and procedures; that at times, we feel, we have miserably lost the essence of life! We have the best of technology, comforts and fast paced networks, yet we do not have time, today, to connect at heart level, to invest in real life relationships and joys! **And this is essentially a serious situation!**

Friends, today in the wake of the pandemic, the fact of our inescapable mortality and certain

death is all the more clear. **Everything that is trivial shall fall away, melt away, and all we will be left with is: Love.** At the end of the day, at the end of it all, all we have is love. All we have is each other. To miss that, do not realize it and act on it, is to miss the fullness, the richness, the flesh of our entire existence. **To have never loved is simply to have never lived. And we are here to live!**

So let's live…let's love! Be vulnerable. Take chances, risks. Get better at loving. Tell people how you feel, really feel, about them. Tell people you love them. Show people you love them. Love yourself. Let people love you. Care. And then, just when you think you can't anymore, care some more. **Because at the root of it all, the heart of it all, is to live a life well-loved, and to have loved well - is to have a life well-lived!**

Love is what connects us to others here on Earth, as well as after leaving this life. Each one of us is like a thread in a beautiful tapestry of life, one that is under the consistent presence of divine love working in the lives of us all.

As we celebrate the feast of St. Joseph, the worker, may *all of us, like him, find meaning, purpose, happiness and fulfilment in our lives through the moments we share and the ways we care for others, the joy we feel in a job well-done, and in the practice of loving life and all those in it to the best of our ability!*

Sr. Rekha Punia, UMI
Nirmala Provincialate, Greater Noida

DATES TO REMEMBER

JULY

01 B.D.Fr. Suresh K. D'Souza
08 B.D. Fr. Johnson M.A.
22 B.D. Fr. Mathew Kumblumoottil
31 B.D. Fr. Viniversal D'Souza

The Possibility of a Paradise

In this modern era, filled with
vizard who talks about rhetoric humanity ...
Palpable I wonder; Will we be able
to find such sheer innocence anywhere?
Let me confess surely not here
but somewhere beyond this sphere
surmounting pile of optimism everywhere.
But my friend as we say ,"You live here,
you die here
Where else can one go but here?
Hallelujah! As our Savior says,
"Let love be without hypocrisy.
Abhor what is evil.
Cling to what is good with faith."
In this modern era, filled with
vizard who talks about rhetoric humanity ...
Palpable I wonder; We will be able
to find such sheer innocence somewhere.
Let me confess surely here , in this sphere;
through our measures here and there,
for we exemplify His divinity everywhere.

Mayuri Augusta Sah
Sacred Heart Church, Mathura

The Holy Father's Prayer Intention

JULY - 2021

Universal Intention - Social Friendship: We pray that, in social, economic and political situations of conflict, we may be courageous and passionate architects of dialogue and friendship.

सोशल मीडिया संबंध जोड़ने के लिए उपयोग करें

आजकल सोशल मीडिया (जैसे व्हाट्स एप, फेस बुक, टूविट्र का ज़माना है। जो कोई फ्रेन्ड रिक्वेस्ट भेजता है बिना सोचे समझे, हम एक्सेप्ट (स्वीकार) कर लेते हैं। शायद हम बहुत गर्व महसूस करते है कि हमारी फ्रेन्ड लिस्ट बहुत लम्बी है। यह एक कड़वी सच्चाई है, कि ये सोशल मीडिया बहुत लोगों के लिए टाइम पास का ज़रिया बन चुका है। सैकड़ों, हजारों लोग संपर्क में आ जाते हैं, लेकिन हमें खुद से यह सवाल पूछना है, कि क्या ये संबंध जोड़ने में मददगार सिद्ध हुए हैं?

जब से सोशल मीडिया आया है, तब से घर के सदस्यों के भीतर फासला ही नहीं हुआ, बल्कि दिलों के बीच दूरी भी दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अपने ही घर में या एक ही छत के नीचे घरवाले अनजान बनकर जी रहे हैं। हर कोई कहता है ''मैं बिज़ी हूँ।'' माता-पिता इतने बिज़ी हो चुके हैं कि केवल छुट्टी के दिनों में ही बच्चों से मुलाकात कर पाते हैं।

आज यदि हम कुछ सवाल अपने से पूछें जैसे कि क्या हम सभी रात को खाने के बाद या पहले एक साथ बैठ कर बाते करते हैं? क्या एक छोटा सा बच्चा/बच्ची, माता-पिता की गोद में बैठकर खेल पाता/पाती है? क्या जवान बच्चे कभी अपने माता-पिता के साथ बैठकर अपना सुख-दु:ख बाँट पाते हैं? इन सभी सवालों के हम में से अधिकांश नकारात्मक उत्तर देंगे क्योंकि हमारे पास एक ही उत्तर है ''हम बिज़ी है'' लेकिन यदि घर पर आने के बाद हम सभी मोबाईल को किनारे करके आपस में बैठकर बातचीत करना शुरू करेगें तो हमारे रिश्तों में अवश्य मज़बूती बढ़ेगी। सच्चाई यही है कि इतने कॉन्टैक्ट होने के बावजूद भी हम एक दूसरे के दिलों से कनेक्ट नहीं हैं। आज एक दूसरे के साथ कॉन्टैक्ट अवश्य है लेकिन कनेक्ट नहीं है अर्थात सम्पर्क है लेकिन संबंध नहीं है।

कोरोना की विपत्ति के समय क्या ये सैकड़ों कॉन्टैक्ट काम आये? वही काम आये, जिनसे आपका संबंध जुड़ा है, आपके माता-पिता, भाई-बहन, प्रिय मित्र या कोई रिश्तेदार। इतना कॉन्टैक्ट होने पर भी ऑक्सीजन सिलेंडर दिलाने, अस्पताल में भर्ती कराने में कोई मददगार हुआ? कॉन्टैक्ट केवल मोबाईल पर ही रह गये, असली जीवन में वही काम आये हैं जिनका हमसे संबंध जुड़ा है।

सोशल मीडिया के माध्यम से हम रिश्तों और सम्बन्धों को नज़दीक लाने की कोशिश करते हैं, लेकिन सोशल मीडिया पर सुख-दु:ख, क्रोध, अपमान, निराशा का एक कृत्रिम संसार रचा जाता है। इस विकराल स्थिति में लोग चरित्र को विभिन्न रंगों में रंग देते है। हमारी संस्कृति, सभ्यता के मानदंडों, पारिवारिक, सामाजिक प्रतिष्ठा और नैतिक मूल्यों के क्षतिग्रस्त होने से हमें सावधानी और एहतियात बरतने की अत्यंत आवश्यकता है।

आइये, हम इस सम्पर्क साधन का उपयोग सम्बन्ध जोड़ने, जीवन को खुशहाल बनाने तथा दु:ख-सुख में एक दूसरे को काम आने हेतु सदुपयोग करें।

फादर ऑल्विन पिंटो, सेंट जोसफ स्कूल, ग्रेटर नोएडा

Ordination to Diaconate

Bro. Kulkant Chhinchani
on
Sunday, July 25, 2021
by
His Grace Most Rev. Dr. Raphy Manjaly
St. Joseph's Church / KNEUS, G. Noida

पवित्र हृदय की भक्ति

जून का महीना प्रभु येशु के पवित्र दिल की भक्ति को समर्पित है। यह कैथोलिक धर्म की सबसे प्रसिद्ध और लोकप्रिय भक्ति है। प्रभु यीशु का पवित्र दिल, परमेश्वर का, मानव जाति के प्रति अनंत प्रेम एवं दया के सागर का प्रतीक है। पवित्र दिल की भक्ति ऑर्थोडॉक्स, एंग्लिकन और लूथरन चर्च में भी प्रचलित है।

यह पवित्र आत्मा के उतरने (पेन्तेकोस्त के महापर्व) के 19 दिन के बाद मनाया जाता है। प्रभु येशु ने अपने पवित्र दिल को संत मागरिट मेरी अलोक्यू ने, जो फ्रांस की रहने वाली और पवित्र दिल समाज की एक कैथोलिक धर्मबहन थी, के सम्मुख प्रकट किया और सन्त पिता लियो 13वें से सारे जग को येसु के पवित्र दिल को समर्पित करने का निवेदन किया।

11 फरवरी 1931 को प्रभु येसु ने पौलेण्ड देश की संत सिस्टर फोस्तिना को अपने दिल से बहते हुये लहू और जल की धारा का दर्शन दिया।

पवित्र दिल की भक्ति करने वालों को निम्नलिखित 12 वरदान मिलेंगे, यह प्रभु का वादा है:

1. जो मेरी भक्ति करेगा मैं उसके जीवन को सभी आवश्यक कृपाओं से भर दूँगा। 2. उसके घर में शान्ति होगी। 3. मैं उन्हें दु:ख में दिलासा दूँगा। 4. मैं उनके लिए जीवन काल और मरण के समय शरण बनूँगा। 5. उनके हरेक नये काम पर आशिष बरसाऊँगा। 6. पापी मेरे दया-सागर दिल में जगह पाएँगे। 7. शीतल दिल वाले भक्त बन जायेंगे। 8. भक्तजन परिपूर्ण हो जायेंगे। 9. जिस जगह पर मेरी पवित्र दिल की तस्वीर होगी और जहाँ इसका सम्मान किया जायेगा, वहाँ आशिषों की बारिश होगी। 10. मैं पुरोहितों को कठोर दिलवालों को स्पर्श करने की कृपा दूँगा। 11. जो इस भक्ति का प्रचार करेगा उसका नाम मेरे दिल पर अंकित होगा। 12. जो लगातार 9 महीनों तक शुक्रवार को योग्य रीति से परमप्रसाद ग्रहण करेगा, वह मेरी कृपा प्राप्त किये बिना, साक्रामेण्ट प्राप्त किये बिना नहीं मरेगा। उसकी अंतिम घड़ी में उसके लिए मेरा पवित्र दिल एक सुरक्षित शरण स्थान होगा।

— सिस्टर नीलू सी.जे., नेपाल

फातिमा हॉस्पीटल, आगरा

नर्सिंग प्रशिक्षण कोर्स प्रवेश सूचना

फातिमा हॉस्पीटल पिछले सत्ताईस वर्षों से आगरा शहर में अपनी सेवाएं दे रहा है। यह अस्पताल समाज के हर वर्ग के लोगों के लिए कार्य कर रहा है। यहां पिछले 8 वर्षों से समाज की निर्धन कन्याओं एवं महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से नर्सिंग प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जो भारत सेवक समाज, चेन्नई द्वारा मान्यता प्राप्त है। कोर्स की अवधि एक वर्ष है। 1 अगस्त 2021 से शुरु होने वाले नये बैच के प्रवेश के लिए जानकारी और आवेदन फार्म फातिमा हॉस्पीटल से प्राप्त कर सकते हैं। योग्यता 12वीं कक्षा उत्तीर्ण। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अस्पताल प्रशासिका, फातिमा हॉस्पीटल
32, एम.जी. रोड, आगरा फोन: 05622466550
मोबाइल नं. : 7599496609, 7248716019

Teaching from Home: The New Challenges and Opportunities

Chalk in one hand, books in the other, rushing down the corridors, greetings on the go, wayward chalk dusted hair, comfortable footwear and entering the class with a smile on the face.

A typical image of a teacher, an image that is embedded in our mind. From gurukuls to classrooms, from black boards to green boards and now smart boards, each change was welcomed by parents, students and teachers alike as there was time to learn and sometimes unlearn. Covid-19 or Corona pandemic is something that has brought about a change that none of us could have envisioned even in our wildest dreams. The world has changed unfathomably. Human beings, the most restless of creatures were confined to their homes, with fear and anxiety in the mind, apprehensive about everything and everyone. The teaching community was also affected. Suddenly we were expected to be tech savvy, mobile phones replaced the chalk and duster, real classroom and children were replaced by virtual classrooms. Initially we were hopeful that things will revert back to the normal, we may not have to move out of our comfort zone, but alas it was all a dream. By the month of May we were sure that it will take months to revert back to the old situation. The teacher, the transformer now had to transform himself/herself and they faced the following challenges.

1. Virtual teaching… children always add colour to the class be it their curious faces, engaging smiles or the varied ways of behaviour, the biggest challenge that we faced as teachers was to teach a class with almost no responses, where you continue to teach without knowing whether they are understanding anything . The focus was only on scholastic activities the co scholastic was totally ignored. Is it correct learning?

2. Technology with internet available at affordable rates most Indians were exploring the cyber world. What's app, Instagram, You Tube etc. were part of everyone's life. 2020 showed us we really didn't know all about the apps we were using. We didn't know that any video above 100 MB will be difficult to upload on what's app, we were caught unaware.

3. No personal touch… every year in April, we eagerly awaited a new batch of students, to know them, to interact with them and also to learn from them, but this year none of this happened. When a teacher interacts with a student, he is not just imparting knowledge but is also instilling

values in them and moulding them to be better human beings with counselling, motivation and sometimes even scolding.

3. No stipulated working hours… the present situation has changed the working hours for teachers, we now have to be available 24*7. Whenever a child has a doubt, he or she is free to call us and clarify regardless of the time.

5. No feedback… Communication is a two way process. The process of communication states that unless the feedback is received, communication is not complete. In online teaching we are just imparting our knowledge without any feedback... no nodding of heads, no smiles of understanding or raising of hands ,we just move on assuming that everything is understood.

6. Work from home… earlier we were envious of people who were working from home, we used to think how lucky they are, but when we were given this opportunity, we found it was not a bed of roses. The mind was always disturbed, distracted with school and home. Even though the workload had reduced by a considerable amount it was more challenging. The classroom and staff room with dearly missed.

7. Screen time... the amount of time spent on mobiles and laptop screen has increased considerably. Earlier mobile was for entertainment and laptops for office work and now... Educators found their eyes were more strained and mobility had become less which resulted in other ailments.

It has been rightly said that necessity is the mother of invention and whenever we are faced with challenges we develop solutions.

1. Learning… every educator must be a learner. Corona pandemic proved to be a blessing in disguise, it dusted away the cobwebs in our mind. We learned a lot of new skills and honed our existing skills. Making PPTs, working on Google Docs, conducting zoom meetings, online exams and what not. This process of e-learning. being digital continues.

2. Patience… our patience levels were always high but the pandemic has increased it further. Every recording of 10 minutes is not actually 10 minutes but a lot of ground work and re-recordings. Things that are out of our hand also play a part. The hawker, the stray dog or sometimes the lady next door. So many things that hamper our work. A teacher is always considered to be a role model, a perfectionist, therefore errors are not allowed.

3. Research and exploration... Each topic to be taught is extensively researched on because everything that we teach virtually is not just looked at, heard, read and understood only by the students but it is out in the open for everyone. We have to be infallible with zero margin for error, all this research has undoubtedly enriched us. We are now exploring newer avenues.

4. Team work… from being individual teachers we have now started to co-operate more with one another, we have become collaborators. We always knew that sharing is caring but now we are practicing it. Everyone is willing to share their newly acquired knowledge. We're learning from our friends and even from our kids.

5. Development of communication skills… A teacher must be a good communicator. In online teaching the problem of class control does not arise the teacher can fully communicate his knowledge with the students. The matter can also be made more interesting with the use of audio visual clips.

6. Flexible... the flexibility to fix the working hours has added to our creativity. We are not bound to deliver our lecture at the allotted time

as per the time table. Time management was therefore better.

With so many flaws and so many good things being said about online teaching we realise one thing... the jungle law of the survival is applicable to all of us. To survive we need to adapt and we homo sapiens are the best at adaptability, we are dynamic.We learn, unlearn and relearn. Teachers have learnt the rubrics of online teaching and digital learning. Class 9 English textbook has a beautiful story of mechanical teachers, when I read it last year I felt sad for the child who was forced to learn using machines. He wanted to go out and play but was forced to be in a room and study, with no interaction with other kids. It was scary and seemed unrealistic, but now I think it is not so unrealistic, it is still scary though. Each child, each situation in the classroom makes us better teachers. Classroom teaching with active interaction with the students is cent percent better than online teaching - virtual teaching. As a teacher I long for the return of a class full of students their chatter, pranks, smiles and energy. Hopeful of a reunion at the earliest.

Ms. Aji Tom
St. Fidelis School, Aligarh

ताजनगरी आपको बुला रही है

उत्तर भारत के सबसे प्राचीन आगरा महाधर्मप्रांत में एक मिशनरी पुरोहित बनकर प्रभु दाखबारी में सेवा करने के लिए प्रभु आपको बुला रहा है। यदि आप इच्छुक हैं, तो फिर देर किस बात की?

योग्यता: 10वीं अथवा 12वीं कक्षा उत्तीर्ण

तुरन्त सम्पर्क करें:-

फादर प्रकाश डिसूज़ा (फोन: 9927923608)
सेंट लॉरेन्स माइनर सेमीनेरी
8, अजमेर रोड, प्रतापपुरा, आगरा - 282 001

पिता वो हैं जो आपके गिरकर संभलने
तक का सफर दूर से देखते हैं,
और आपको परखते हैं कि आप खुद से,
उठ पाते हो या मदद की गुहार लगाते हो।
पिता वो हैं जो आपकी बार-बार आलोचना कर,
आपको एक जिम्मेदार इंसान बनाते हैं।
जब आप निराश होकर पिता की अवहेलना करते हो,
तो वह धैर्य से जिम्मेदारी निभाते हैं।
पिता को वर्तमान में परिवार के,
भरणपोषण की चिंता नहीं सताती।
वह तो बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए
दिन-रात चिंतित रहते हैं।
परिवार छोटा हो या बड़ा,
पर होता है पिता के कंधों पर खड़ा।
दूर से पिता हर खतरे को भांप जाते हैं,
और अपने परिवार को बचाने के लिए
दुनिया को नाप आते हैं।
वह आपको प्यार से बार-बार नहीं दुलारते हैं,
पर आपकी चिंता में अपना जीवन करते हैं।
जैसे रेगिस्तान में थोड़ी सी हरियाली
दिल को सुकून देती है
वैसे ही पिता का साया घर को महफूज बनाता है।
पास रहकर भी दूर रहते हैं पिता,
बच्चों को मजबूत बनाने के लिए कठोर रहते हैं पिता।
पिता के हाथों की लकीरों में छुपा हैं बचपन मेरा
वही हैं मेरे दोस्त, वही हैं सारथी मेरे।

अंजलीना मोसेस, संत जूड पल्ली, आगरा

हम सबकी प्यारी माँ मरियम

''हे मेरे बच्चों, यह मेरे जीवन में एक अनोखा अवसर था, कि मैंने अपने मृत बेटे का शरीर अपनी बाहों में पाया। मैंने अपने बेटे के मृत शरीर को प्यार से आखिरी बार देखा। उसका शरीर चारों तरफ गहरे घावों से भरा हुआ था, यहाँ तक उसका हृदय भी छेदा गया था। मुझे अपने दिल में असहनीय दर्द का अनुभव हुआ, मानो एक तेज तलवार मेरे हृदय को आर-पार भेद गयी हो। मैंने आँखें बंद कर मुक्तिदाता प्रभु के लिये, ईश्वर को धन्यवाद दिया। यह वह घड़ी थी जब मैंने पिता परमेश्वर की मुक्ति योजना को पूर्ण किया। यह मेरे परमेश्वर की इच्छानुसार आखिरी हाँ थी।''

माँ शब्द सुनते ही हमारा मन श्रद्धा से भर जाता है। माँ के वात्सल्य का एहसास मनुष्य के साथ-साथ संसार के सभी जीवों को होता है। माताओं में माँ मरियम का स्थान सर्वोपरि है। पवित्र बाईबल में मरियम का ज़िक्र स्वर्गदूत के सन्देश से शुरु होता है। जब हम माता मरियम के बारे में सोचते या मनन करते हैं, तो उनके सम्पूर्ण जीवन को विस्तृत करने के लिये मन में एक शब्द प्रस्फुटित होता है, वह है 'आमेन' अर्थात ऐसा ही हो, या 'तेरी इच्छा पूरी हो।'

माँ मरियम एवं बालक येसु का संबंध एक स्वाभाविक माँ-बेटे का था। यह जानते हुए भी कि येसु को परमपिता ने मसीह के रूप में दुनिया में भेजा है, वे येसु का पालन-पोषण एक सामान्य बच्चे की तरह कर रही थीं। वे येसु को जीवन के आदर्शों से अवगत कराते हुए बड़ा कर रही थी। बाल्यावस्था से बड़ा होने तक येसु के चमत्कारी कार्यकलापों को देखकर वे समझ गयी थीं, कि परमेश्वर ने जो कार्य उन्हें सौंपा है, वह अच्छी तरह से उन्हें पूरा करना है।

मैंने एक दिन अपने प्रोटेस्टेंट मित्र से पूछा, कि आप लोगों के गिरजाघरों में माँ-मरियम की मूर्ति नहीं रहती है, और उनकी आराधना क्यों नहीं होती? तब उन्होंने कहा, कि ''ईश्वर से कुछ माँगने के लिये मध्यस्थता की क्या जरूरत है?'' यह बात आश्चर्यचकित करने वाली थी माँ

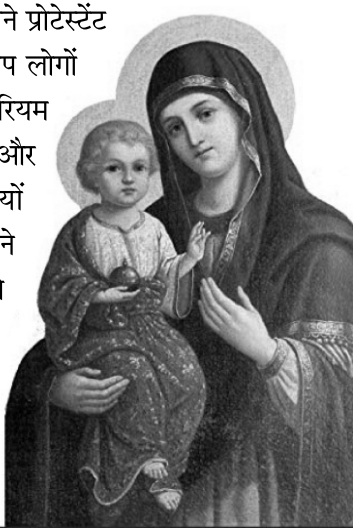

मरियम एवं येसु का संबंध भी माँ-बेटे का है। और हमारा संबंध भी माँ-मरियम के साथ माँ-बेटे का है। जब परिवार में बच्चों की कोई नहीं सुनता, तब अंत में वे माँ से माँगने जाते हैं और वह पूरा हो जाता है।

हम पवित्र बाईबल में प्रभु येसु द्वारा काना नगर के विवाह में चमत्कार के बारे में सुनते हैं, जिसमें माँ-मरियम ने प्रभु येसु से कहा कि ''विवाह में परोसने के लिये अँगूरी खत्म हो गयी है,'' येसु ने कहा, कि ''अभी मेरा समय नहीं आया है।'' माँ-मरियम अपने बेटे को जानती थी, कि वह उनकी बात नहीं टालेंगे। इसलिये उन्होंने दोबारा येसु नहीं कहा, उन्होंने सीधा नौकरों से कहा, कि ''येसु जैसा कहते हैं, वैसा करो।'' येसु ने नौकरों को मटकों में पानी भरने को कहा जो येसु के चमत्कार से अँगूरी बन गया। यह घटना हमें माँ-बेटे के प्रेम एवं आज्ञाकारिता को दर्शाती है। यह हमें भी भरोसा दिलाती है कि माँ-मरियम के माध्यम से किया हुआ हमारा निवेदन येसु जरूर पूरा करते हैं।

हम जानते हैं कि दुनिया में जब भी मनुष्य पाप करता है जब वह ईश्वर के विरुद्ध जाता है। येसु हमें पापों से

शेष पृष्ठ 23 पर

St. Joseph's Ladder

The Chapel of Loretto in Santa Fe, New Mexico, is home to an exceptional work of carpentry. The staircase is well known for being surrounded by at least two mysteries: the identity of its builder and the physics of its structure. No one is able to fully understand how the structure can stand on its feet without any kind of central support attached to it. There is, may be, a third mystery, too: although the staircase is known to be made of spruce wood, no one has been able to determine either what subspecies of spruce it is, or even how the wood got to the chapel.

In 1852, by order of the bishop of Santa Fe, Jean Baptiste Lamy, the Chapel of Our Lady of Light inspired by the Sainte-Chapelle in Paris was built. It was placed under the care of the Sisters of Loretto, who were to arrive from Kentucky to start a school for girls.

When the chapel was ready, builders were faced with an unexpected problem: they could not add a ladder leading from the nave to the choir, on the second floor. It was a sad error in the design one that the building's architect, Antonio Mouly, could not solve, since he had already passed away. When the nuns insisted on building a staircase, the builders told them it would be impossible, and that building a normal, regular ladder would take too much room. Finally, they advised the nuns to demolish the choir.

Instead, the nuns decided to pray a novena to St. Joseph, patron saint of carpenters, asking for a solution. After finishing the novena, according to testimonies that have passed from generation to generation since the mid-nineteenth century, a man appeared at the door of the chapel, saying that he could build a stairway, under one condition: he be granted total privacy. The stranger locked himself in the chapel for three months with a saw, a square and a few other simple tools, and disappeared as soon as the work was finished, without ever having asked for any payment for his services.

The staircase, which is around six meters high, takes two full turns over its axis until it reaches the choir. It was built without any nails or glue, and lacks any kind of central support. The construction itself is said to be "impossible." According to some, it should have collapsed the very first moment someone used it, although it is assumed that the central spiral staircase is narrow enough to work as a central support on its own.

In any case, the original staircase was not attached to any wall until 1887, ten years later, when the railing was added, and the outer spiral was attached to a nearby pillar. Tradition claims the mystery of the identity of the carpenter has never been satisfactorily solved, and there is not even a delivery report that might help decipher where the wood came from. During those three months, no one saw anyone entering or leaving the chapel.

As the carpenter left before the Mother Superior could pay him, the Sisters of Loretto offered a reward to anyone who could make his identity known, but no one ever showed up. So, yes: since then, the crafting of the staircase has been attributed to St. Joseph himself!

- Daniel Esparza

(The Voice of St. Jude, Apr. - June 2021)

विश्वास का जीवन

प्रभु में प्यारे भाइयों-बहनों, आज हम जीवित परमेश्वर के वचन के द्वारा विश्वासी जीवन देखने जा रहे हैं। परमेश्वर के जीवित वचन को ग्रहण करने के पश्चात भी मसीह भाई-बहन जीवन में निराशा की ओर बढ़ते जा रहे हैं। इसलिए आज मसीह भाई-बहनों की प्रथम आवश्यकता है कि अपना जीवन प्रभु के वचनों के द्वारा जीयें।

आइये हम देखते हैं जीवित परमेश्वर का वचन (2 तीमुथियुस 3:16)। ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। भाईयो-बहनों 'सम्पूर्ण' का अर्थ है: पूरा-पवित्र वचन, तो आज हमें यह जानने की जरूरत है कि उत्पत्ति से लेकर प्रकाशित वाक्य तक यह केवल मुद्रित सामग्री ही नहीं है, बल्कि जीवित परमेश्वर के मुख से निकलने वाली वाणी है, जिसे आज हम वचन के रूप में देख रहे हैं। सर्वप्रथम हमें प्रभु से प्रार्थना व विनती के माध्यम से वचन पर विश्वास बढ़ाने की आवश्यकता है।

विश्वास के वचन (मारकुस 11:24) इस सुसमाचार में प्रभु यीशु मसीह स्वयं कह रहे हैं ''इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ कि विश्वास कर लो कि तुम्हें मिल गया है। वह तुम्हारे लिए हो जायेगा।''

भाईयों-बहनों आपने देखा कि हमारे उद्धारकर्ता प्रभु यीशु-मसीह वचन के द्वारा हम से क्या कह रहे हैं। आज हमें प्रभु में एक विश्वासी जीवन जीने की आवश्यकता है, ना कि ठहरा या भटका हुआ जीवन। परमेश्वर के पवित्र वचन को किसी और पुस्तक की तरह पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। बल्कि प्रार्थना व विश्वास के साथ पढ़ने की आवश्यकता है, क्योंकि भाईयों-बहनों पवित्र शास्त्र परमेश्वर के मुख से निकलने वाली वाणी के द्वारा लिखा गया है।

विश्वास के द्वारा कार्य (1 राजा, अध्याय 17 वचन 1:15) इन वचनों के माध्यम से कि सिदोन की सरेप्ता नगर की विधवा के विश्वास के द्वारा यहोवा परमेश्वर ने उसके लिये कितना महान आश्चर्यकर्म किया।

(मलाकी 3:6) क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं; इस वचन के अनुसार हम भली भांति समझ सकते हैं कि यहोवा परमेश्वर बदलने वाला परमेश्वर नहीं है।

(अय्यूब 37:1-5) इस वचन के अनुसार हमें यह ज्ञात होता है कि अय्यूब की पुस्तक परमेश्वर के शब्द के द्वारा 400 ई.पू. लिखी गयी थी। अर्थात् जब हम अय्यूब की पुस्तक के 37:1-5 वचनों के माध्यम के द्वारा देखते हैं तो यह ज्ञात होता है कि हमारा परमेश्वर तब और आज तक एक जैसा ही है। क्योंकि जब हम वर्षा के समय में बादलों की गड़गड़ाहट को सुनते हैं तो वह गड़गड़ाहट कोई बादलों के आपस में टकराने का शोर व आवाज ही नहीं है। वह हमारे जीवित परमेश्वर का शब्द है जो आज भी हम सुन सकते हैं।

इस वचन के माध्यम से मैं बस यही बताना चाहता हूँ कि यह वचन 400 ई.पू. लिखा गया, लेकिन आज भी हम इस गड़गड़ाहट व गर्जना को सुन सकते हैं, जो परमेश्वर का शब्द है।

इससे तात्पर्य है कि यह शब्द परमेश्वर ने हजारों साल पहले कहे लेकिन आज भी परमेश्वर के शब्द का कार्य कर रहे हैं।

यूहन्ना 11:26 में प्रिय भाइयों-बहनों प्रभु यीशु मसीह ने स्वयं मारथा से कहा, कि ''अगर तू विश्वास करेगी तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।''

यूहन्ना 11:27 में हम देखते हैं, कि मारथा प्रभु से कहती है कि मैं विश्वास कर चुकी हूँ।

भाइयों-बहनों, आज भी हमें मारथा जैसे विश्वासी जीवन जीने की आवश्यकता है, कि मैं विश्वास कर चुका/या कर चुकी हूँ।

जब परमेश्वर यहोवा ने अब्राहम से कहा, कि ''अपनी पत्नी और धन-सम्पत्ति लेकर हारान देश से निकल जा। मैं तुझको एक नया देश दूँगा।'' (उत्पत्ति 12) तब अब्राहम ने परमेश्वर से सवाल जवाब नहीं किया बल्कि परमेश्वर के शब्दों पर विश्वास करके हारान देश से कनान देश की ओर चला गया।

इस वचन के माध्यम से हम देखते हैं कि अब्राहम ने परमेश्वर से यह नहीं कहा कि परमेश्वर मुझे घर-मिलेगा कि नहीं, खाना मिलेगा कि नहीं, धन-सम्पत्ति मिलेगी की नहीं, उसने ऐसा कुछ नहीं कहा बल्कि विश्वास के द्वारा परमेश्वर के शब्द पर विश्वास करके वहाँ से कनान देश की ओर चला गया।

आजकल हम ज्यादातर अपने आसपास व अपने मसीह समाज में लोगों को देख रहे हैं कि हर व्यक्ति ने किसी न किसी समस्या में अपनी बुद्धि व विवेक तथा एक-दूसरे व्यक्तियों पर विश्वास करके अपने लिये समस्याओं का जाल बनाकर तैयार कर लिया है।

उदाहरणार्थ- यह कैसे होगा, वो कैसे होगा? अब क्या होगा? प्रतिदिन नाना प्रकार की चिन्ताओं में लगे रहते हैं।

मेरे प्रिय भाइयों-बहनों, मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि चिन्ताएं व डर परमेश्वर की ओर से नहीं आते हैं। बल्कि चिन्ता और डर शैतान की ओर से हैं। हम देखे हैं कि हमारा जीवित परमेश्वर हमसे वचन के माध्यम से क्या कहता है।

फिलिप्पियो 4:6 इस वचन के माध्यम से पिता हमें बताना चाहते हैं कि किसी बात की चिन्ता मत करो। तुम्हारे प्रार्थना निवेदन धन्यवाद के साथ मेरे सामने उपस्थित किये जायें।

यह वचन परमेश्वर के शब्द हैं, कि हमारा परमेश्वर झूठ बोलने वाला नहीं है। इन वचनों के माध्यम से आप भी प्रभु परमेश्वर में एक विश्वासी जीवन व्यतीत करें। जैसा जीवन जीने के लिये इन वचनों के माध्यम से पिता ने हमसे कहा है।

डर व चिन्ता का जीवन न बितायें बल्कि परमेश्वर पर भरोसे व विश्वास का जीवन बिताने की कोशिश करें।

प्रवक्ता ग्रंथ 40:27 के अनुसार जो प्रभु पर श्रद्धा रखता है उसे किसी बात की कमी नहीं।

इस वचन के माध्यम से प्रभु पर श्रद्धा व विश्वास करके आनन्दपूर्ण जीवन बितायें। हताशा, निराशा व चिन्ता से मुक्त जीवन जीएं। प्रभु आपको आशीष दे।

—नरेन्द्र मैसी, सेंट मेरी चर्च, आगरा

पृष्ठ 20 का शेष

मुक्ति दिलाने के लिए 'क्रूस पर मरे।' हमारे पापों से माँ मरियम का हृदय दु:ख से छेदित होता है। माँ-मरियम इसलिये हमें पापों से दूर रखने के लिए समय-समय पर दुनिया में प्रकट होती है और हमें माला विनती जपने के लिये प्रेरित करती है। आज कई स्थानों में माता मरियम की मूर्ति से आँसू और तेल निकलने का चमत्कार देखने को मिलता है, जो हमें यह अहसास दिलाता है कि माँ-मरियम हमारे पापों से दु:खित है।

इन चमत्कारों से हमें पता चलता है कि हमारा ईसाई धर्म केवल इतिहास बनकर नहीं रह गया है बल्कि इसमें सच्चाई है और हमें ईश्वर द्वारा बताये रास्ते पर चलना है।

—विनोद जेम्स, सेंट मेरीज़ चर्च, नोएडा

कोरोना का क्या रोना?

पिछले दो वर्षों से हम सभी कोरोना का दंश झेल रहे हैं। अपने कितने ही प्रियजन सदा के लिए बिछुड़ गए हैं। बहुतों ने इस काल में अपने प्रियजनों को खो दिया। मैंने भी अपनी छोटी बहन, एक जवान पोते और कई मित्रों को इस दौरान खोया है। अपनी पीड़ा सहें या उनका गम हल्का करें? कुछ समझ में नहीं आ रहा है... एक स्याह खामोशी चारों ओर है। बहुत करीबी भी एक अनजाने भय से दूर-दूर से मिलते हैं। इसी बीच याद आता है, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि, उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि हम उस पर और उसके द्वारा दिए उद्धार को देखें। प्रश्न उठता है क्या यही है प्यार-अनूठा प्रेम? मैं तुम्हारे आँसू पोंछ डालूँगा कहकर होठों की हंसी ही छीन ली। जीवन का समीकरण ही उलझ गया है। अब तो विश्वास भी डगमगाने लगा है, **खुदा माफ करे।**

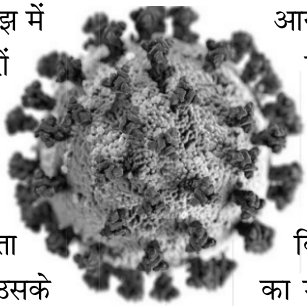

सोचती हूँ मन क्यों विचलित है? शायद हमने वचनों को गहरायी से नहीं थामा है। आज मानव को परमेश्वर से अधिक विज्ञान पर भरोसा है? जबकि उसने पहले ही कहा है- ''अपनी समझ का सहारा न लेना।'' हम सृष्टि को चुनौती देने चले थे। परिणाम सामने है।

पवित्र बाईबल में प्रारम्भ (उत्पत्ति ग्रंथ) से लेकर अन्त (प्रकाशना ग्रंथ) तक व्याप्त है ईश्वर का मानव के प्रति प्रेम। प्रेम को बरकरार रखने के नियम। मानव द्वारा इस प्रेम की अवहेलना! पाप में लिप्त होना, परमेश्वर के प्रेम की पराकाष्ठा, कि मानव को बार-बार क्षमा करना। मानव के उद्धार की खातिर अपने प्राण दे देना। फिर भी मानव का ढीठ बने रहना। समय-समय पर नबियों के माध्यम से ईश्वर द्वारा हमें समझाते रहना और अन्तोगत्वा परमेश्वर का न्याय होना भी अवश्यम्भावी है। सब कुछ तो है वचनों में, पवित्र बाईबल में। हम ही अभिमानी हो गए हैं। निडर, निर्लज्ज।

प्रकाशित वाक्य अध्याय 4 के 7वें पद में लिखा है- ''परमेश्वर से डरो और उसकी महिमा करो: क्योंकि, उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है।''

मानव स्वभाव से ही अपना दोष दूसरों पर मढ़ता आया है। हम ईश्वर और प्रकृति दोनों के प्रति दोषी हैं। प्रकृति ने हमें कितना कुछ दिया, मगर हमने स्वार्थवश प्रकृति का ही दोहन किया है। फिर भी अपनी गलती नहीं मानते हैं। एक प्रेमी पिता अपनी सन्तान को चाहे कितना भी प्रेम क्यों न करता हो लेकिन सन्तान का मनमाना व्यवहार, उसकी उद्‌ण्डता, बेअदबी आखिर पिता के रोष को जगा ही देती है। पिता भी ऐसी सन्तान को अपनी मीरास से बेदखल कर ही देता है। फिर हमने तो परमपिता को रोष दिलाया है। हम अक्ष्म्य अपराधी हैं। आखिर हम अपना दोष कब मानेंगे?

आज पूरी पृथ्वी विनाश के कगार पर खड़ी है। प्रकृति कराह रही है, हमारी वजह से, मानव गलती से। फिर भी अब भी अधिकांश हैं जो कहीं सांसों का सौदा कर रहे हैं। कहीं रोज़ी-रोटी छीन रहे हैं, कहीं अपनी तिजोरी भरने की होड़, कहीं सत्ता सुख की लालसा, झूठ, लालच, काला बाजारी, अश्लील सौदागरी, मासूमों का व्यापार, हत्या, बलात्कार। जीवन रक्षक ही भक्षक बन गए हैं, आखिर मानव कब सुधरेगा? इसीलिए संसार में दु:ख, पीड़ा, आँसुओं, दर्द का तांडव हो रहा है। जबकि परमेश्वर अब भी वही है, सदा सर्वदा एक सा प्रेमी! न वो बदलता है, न उसके वायदे। नबी यशायाह 26:3 में लिखा है- जिसका मन तुझमें धीरज धरे हुए है, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है; क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।

शेष पृष्ठ 26 पर

The Reality in the lives of the suffering poor

Mahatma Gandhi, was moved by the misery and the suffering of the people. It was his life's ambition to wipe the tears from every suffering eye. A few true stories, in short, of the suffering poor.

Indravati, who spent all to save her husband from sickness. Those on next gage for 2 lakhs, interest has gone up to Rs. 70 thousand. She lives in that same house and has to pay 1000/- per month as rent. To add to her misery, her son working on construction site fell & fractured his back-bone. To get medicine, she kept her son's mobile on shop & took Rs. 2000/-. She went for potato picking, after 3 days became very sick as she is so miserable & full of tensions. At present she goes to roll chappaties whenever there are marriage, she experience difficult times.

Nazma, suffered greatly as her husband suffered from cancer, with great struggle she got money for medicine, como therapy etc. she used to inject her husband to ease his unberable pain. She could not go to work, as she had to take care of him. She completely deepended on charity, as no earning member.

Ten of the village boys, went to Pune, in search of a job, some riot took place and all were under the custody of the police. The family members paid & got released them out, except one who was v.v. poor, he phoned his wife, she went begging fox help & took 3 thousand, she was asked to pay 5 thousand, as she explained how poor they were, having 6 small children, the lady police hit her very badly with a strong stick and said, if you don't bring the money within 4 days time, then you have to pay Rs. 10 thousand, only then he will be released. With a heavy heart again she went pleading for help, the same person listening to her sad story gave her 2000/- Finally she was able to release her husband. Such is the plight of the poor with no one to support them.

Five of the very poor vegetable vendors, who used to hire hand-carts and buy vegetable for whole sale price, each were given a new handcard and some money to do vegetable business. Some are doing well but some used their money for family basic needs each day and had no money to continue their business. Its very sad to explain their unhappy plight and struggles they go through.

Many of the old and some widows are at the mercy of some generous hearts also go begging to sustain themselves.

Many of the children are forced to take up jobs, at an age, when they ought to be in school, just to support the family.

Babu, who worked on road construction, a part of the bull-dozer fell on his foot and handicapped him for 22 yrs. The wound is not

getting healed, doctors said that he was to amput his beg and needs 1 lakh for operation, he has no money to feed his family and its imposible to go for operation.

Many poor of Kaulakha village however much they are sick, are unable to got to doctor, even minor fractured cases, they endure so much pain & remain without any treatment but home remedy.

Many people were fortunate enough to go for potato picking for 15 days and earned Rs. 230/- per day plus some potatoes were given to then they worked for nearly 13 hours.

The poor suffer terribly, sometimes the remarks passed by people is shocking. These poor are lazy, stupid, no decency, they drink and drink so fully, no manners, they gamble, fight, beat their wives, ill treat their children, ungrateful wretches, such terrible and many more remarks are hurled on them.

Unless we are in their shoes we will never ever understand their bad sorry plight. Sure enough there are many professional beggars but much more the suffering poor.

Lets do something for these our unfortunate ones, where ever we are inherit God's blessings and blessings of the suffering poor. It is easy to affix labels and to condemn the poor affilthy, stupid, but to come closer to their lives, get under their skin and perceive their unhappy plight is to discover for ourselves, the unhappy world of the poor, marginalised, oppressed and the exploited. To work for such poor people is unexplainable. Helping them with money, basic etc. but more more spending your precious time and listening to their woes even at odd times.

Sr. Marina Soares
St. Jude's Church, Agra

पृष्ठ 24 का शेष

मित्रों! यह बड़ी नाजुक घड़ी है। अपने विश्वास को डगमगाने न दो। शैतान पूरी शक्ति से अपना खेल खेल रहा है। उसे पराजित करो। अपने दु:ख को सेवा में बदलो। पीड़ा को प्रेम में और हताशा को हंसी में। पश्चाताप करो, गलती मानो।

हमारे जीवनरूपी घर की नींव चट्टान पर है किसी रेत बालू पर नहीं। आने दो महामारी, गरीबी, आँसू, दु:ख दर्द रूपी आँधियां। परवाह न करो। क्योंकि वही परमेश्वर हमें पीड़ा देता है तो करूणा भी करता है।

मित्रों! परमेश्वर की शान्ति हमारी समझ से परे है। वही हमारे हृदयों और विचारों को मसीह में सुरक्षित रखेगा। (फिलिप्पियों 4:7)

हम आज भी जीवित और सुरक्षित हैं। यही पिता परमेश्वर के प्रेम का सबसे बड़ा प्रमाण है। आप स्वस्थ रहें, सुरक्षित रहें, प्रभु की आशीष मिलती रहे।

—निशी अगस्टीन, कथीड्रल पल्ली, आगरा

पी.एच.डी. की उपाधि से सम्मानित

श्रीमती मारथा शर्मा (पत्नी श्री नितिन शर्मा) असिस्टैंट प्रोफेसर (फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट संकाय सेंट जॉन्स डिग्री कॉलेज, आगरा) ने कॉमर्स विषय में 'एन एनालाइटिकल स्टडी ऑफ द क्रेडिट रिस्क मैनेजमेंट इन सिलेक्टेड पब्लिक सैक्टर बैंक्स' पर अपना शोध कार्य डॉ. पी.ए. जॉय (एसोसिएट प्रोफेसर सेंट जॉन्स कॉलेज) के सफल निर्देशन में पूरा किया।

डॉ. मारथा शर्मा श्री अगस्टीन व निशी अगस्टीन की पुत्री तथा श्रीमती भगवती शर्मा की पुत्रवधू हैं। **अग्रेडियन्स** परिवार डॉ. मारथा शर्मा को उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं देता है।

जुबिलीधारक सिस्टर अम्ब्रोसिया से एक भेंट

श्रद्धेया सिस्टर अम्ब्रोसिया एम.सी. जिन्हें हम प्यार से रोज़री नन (माला बनाने वाली धर्मबहन/सिस्टर) कहते हैं, ने हाल ही में 19 जून 2021 को अपने प्रथम व्रत धारण की गोल्डन जुबिली (स्वर्ण जयन्ती) मनाई। इस अवसर पर **अग्रेडियन्स** ने उनसे एक विशेष साक्षात्कार लिया। यहाँ प्रस्तुत हैं, उस साक्षात्कार के कुछ मुख्य अंश

- सि. अम्ब्रोसिया जी अपने और अपनी बुलाहट के बारे में हमारे पाठकों को कुछ बताइए।

सि. अम्ब्रोसिया: मेरा जन्म 24 सितम्बर 1943 को उड़ीसा के ओरबा झोराबहार पल्ली में हुआ था। पाँच बहनों और एक भाई के परिवार में मैं सबसे छोटी हूँ। छोटी होने के कारण में घर में सबकी प्यारी थी। बचपन से ही एक धर्मबहनन बनने की तीव्र इच्छा थी, इसी उद्देश्य से 2 जुलाई 1968 को अपने माता-पिता की अनुमति पाकर मैं कलकत्ता आ गई।

23 मई 1971 को मेरा प्रथम व्रत धारण कलकत्ता स्थित मदर हाउस में हुआ। मेरा नम्बर 382 है। हमारे बैच में 26 धर्म बहनें थीं, जिन्होंने प्रथम मन्नत (व्रत धारण) किया था। समयान्तराल में चार धर्मबहनें प्रभु के पास चली गई हैं। मैंने अंतिम मन्नत 24 मई 1976 को ली।

- आपने किन-किन स्थानों पर कार्य किया है?

सिस्टर अम्ब्रोसिया: मैंने मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल में प्रभु सेवा की है। प्रथम व्रत धारण के बाद मेरी पहली नियुक्ति झाँसी में हुई थी, जहाँ मैं 6 महीनों तक रही। उसके बाद वाराणसी गई, जहाँ 1 वर्ष 3 महीने रही। इसी दौरान मैं बहुत बीमार पड़ गई, जहाँ से मुझे पश्चिम बंगाल में भेज दिया गया, वहाँ मैं 6 महीने रही। वहाँ से आसनसोल गई, जहाँ डेढ़ वर्ष रही। तत्पश्चात बहरामपुर गई, जहाँ मैंने एक वर्ष तक कार्य किया। वहाँ से मैं पुन: कलकत्ता आ गई, जहाँ 6 महीने तक रही। इसी दौरान मैंने अंतिम मन्नत (व्रत धारण) किया।

अंतिम मन्नत के बाद मेरठ आ गई, जहाँ डेढ़ वर्ष तक कार्य किया। वहाँ से सहारनपुर (डेढ़ वर्ष), अलीगढ़ (डेढ़ वर्ष) और फिर वहाँ से एक बार फिर झाँसी आ गई, जहाँ एक लम्बे लगभग (7 वर्ष) तक कार्यरत रही। झाँसी से अगले साढ़े चार साल तक के लिए जबलपुर गई। जबलपुर से पुन: तीन महीनों के लिए कलकत्ता गई। कलकत्ता से रतलाम गई और वहाँ दो वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात मेरा तबादला ललितपुर हो गया, यहाँ मैं अगले 5 वर्ष तक रही। ललितपुर से एक बार पुन: सहारनपुर (5 वर्षों के लिए) गई। वहाँ से अगले 6 वर्षों के लिए गाजियाबाद में कार्य किया। गाजियाबाद से आगरा आ गई और प्रभु कृपा से अभी यहीं पर हूँ। आगे ईश्वर की मर्जी!

-सिस्टर जी, लोग आपको रोज़री नन या रोज़री (बनाने वाली) सिस्टर कहते हैं। आपको रोज़री बनाने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

सिस्टर अम्ब्रोसिया: जी हाँ, मुझे जानने वाले बहुत से लोग मुझे रोज़री सिस्टर के नाम से भी जानते हैं।

उन दिनों मेरी पोस्टिंग सहारनपुर में थी। वहाँ मेरे साथ की एक सिस्टर बेनेदिक्तुस की रोज़री कहीं खो गई थी। इस बात को लेकर वह परेशान और निराश थी। उस रोज़री के साथ उनका भावनात्मक सम्बन्ध था। उन्हीं दिनों वहाँ के पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर तारसन थॉमस ने हमें बड़े दिन के ईनाम के रूप में सौ-सौ रूपये दिए। वो रूपये पाकर हम इतने प्रसन्न हो गए कि मानों हमें बहुत बड़ा खजाना मिल गया हो। तब हम दोनों ने सहारनपुर के बाजार से उन पैसों में तार, प्लायर आदि खरीदे। बस वहीं से एक शुरुआत हो गई। कॉन्वेण्ट लौटने पर हम लोगों ने स्वयं रोज़री बनाना शुरु कर दिया।

उसके बाद मेरा तबादला गाजियाबाद हो गया। वहाँ भी

एक सिस्टर थीं, जो रोज़री बनाती थीं, लेकिन रोज़री बनाना वो किसी को सिखाती नहीं थी...तब मैंने स्वयं रोज़री बनाना सीख लिया। प्राय: एक दिन में एक रोज़री बनकर तैयार हो जाती है। हमारी संस्था की बहुत सी धर्मबहनें मुझे रोज़री बनाने को कहती हैं। दिल्ली से फादर रविन्द्र जैन (सी. एम.) भी प्रति वर्ष मुझसे बड़ी संख्या में रोज़री बनवाते हैं। मुझे इस बात की बहुत खुशी और संतुष्टि है, कि प्रभु मुझे इस काम के लिए इस्तेमाल कर रहा है। सेंट मेरीज़ चर्च, आगरा के पल्ली पुरोहित श्रद्धेय फादर स्टीफन कोलन्दईसामी ने भी कोरोना काल में रोज़री बनाना सीख लिया और अब वे प्रतिदिन इस काम में मेरी सहायता करते हैं। मैं उन्हें और अपनी कम्युनिटी की सभी सिस्टर्स को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहती हूँ।

सिस्टर जी, इस कोरोना काल में आपने अपने धार्मिक जीवन (व्रत धारण) की पचासवीं वर्षगाँठ मनाई है। प्रभु ने आप पर बड़ा अनुग्रह किया है। आपको कैसा लग रहा है?

सि. अम्ब्रोसिया: सबसे पहले मैं पिता ईश्वर को सारे दिल से धन्यवाद देना चाहती हूँ, कि उसने मुझे चुना और एक धर्मबहन की बुलाहट प्रदान की। उसने आज तक मुझे संभाला और सुरक्षित रखा। मैं कई बार बहुत गम्भीर रूप से बीमार पड़ गई थी, बचने की उम्मीद भी प्राय: समाप्त हो गई थी, फिर भी उसने मुझे मरने नहीं दिया।

साथ ही मैं आपकी प्यारी मदर (संत तेरेसा) को नमन करती हूँ, जिन्होंने मुझे अपनी संस्था में स्वीकार किया। उन्होंने स्वयं हमें पढ़ाया और संस्था में शिक्षित किया।

स्वर्ण जयन्ती के बाद मैं बहुत आनन्दित और गौरवान्वित अनुभव कर रही हूँ। हालाँकि जुबिली की वास्तविक तारीख 24 मई थी, लेकिन 19 अप्रैल को जुबिली समारोह रखा गया था, किन्तु मैं पुन: एक बार गम्भीर रूप से बीमार हो गई, तो इसे 19 जून के लिए निश्चित कर दिया गया था। कोरोना संक्रमण के कारण बहुत बड़ा समारोह नहीं रखा गया। मेरे अपने रिश्तेदार तो जयपुर से भी नहीं आ सके, इसका मुझे हमेशा अफसोस रहेगा, लेकिन प्रभु की यही इच्छा थी। आगरा के आर्चबिशप डॉ. राफी मंजलि, हमारी रीजनल सुपीरियर सिस्टर अमृतम और अलीगढ़ से हमारी अपनी सिस्टर्स के आने से मेरी खुशी में चार चाँद लग गए।

- सिस्टर जी स्वर्ण जयन्ती के इस मुबारक मौके पर आप लोगों को क्या संदेश देना चाहेंगी?

सिस्टर अम्ब्रोसिया: प्रार्थना करो। प्रतिदिन अपने घर-परिवार में रोज़री माला जपो और दूसरों की सेवा करो। साथ ही एक दूसरे की मदद करो - यही प्रभु की आज्ञा है और उसे प्रिय भी है।

- धन्यवाद सिस्टर जी!

सिस्टर अम्ब्रोसिया: ईश्वर आपको आशीष दे।

-अग्रेडियन्स के लिए मेघा, मुक्ति एवं तानिया

Sr. Nepuntia,MC is no more!

Agra, 6 May: Rev. Sr. Nepuntia M.C. (79 years) passed away swiftly on May 6, 2021 in the Convent of Missionaries of Charity, Agra. She was not well for sometime. She died of old age.

Her funeral Mass was offered by His Grace Most Rev. Dr. Raphy Manjaly (Archbishop of Agra) at the Convent Chapel. Fr. Sunil Mathew her nephew and other three family members from Delhi also attended the service. Rev. Sr. Amritam, MC, Regional Superior and MC Sisters from Aligarh too joined the Requiem Mass. After the Mass, her body was taken to the Cathedral and burried there by the side of the Cathedral, near Our Lady's Grotto. May her soul rest in peace. Sr. Nepuntia was known for her loving nature and generous heart. The inmates will miss their 'Nani' for long time.

में विस्तार से महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। साथ ही सभी को मास्क लगाने के फायदे भी बताये गये। उन्होंने लोगों को कम से कम 20 सेकण्ड तक अच्छी तरह साबुन से हाथ धोने का सही तरीका बताया और संदेश भी दिया। सभी ने ध्यानपूर्वक इन्हें सुना और साथ ही अपनी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की।

टी.बी., एच.आई.वी. व कोविड-19 पर ट्रेनिंग प्रोग्राम रखा गया

आगरा, 18 जून। फातिमा हॉस्पीटल, आगरा की मलिन बस्तियों में चल रहे एच.सी.डी.पी.सी. प्रोग्राम के अन्तर्गत फातिमा हॉस्पीटल में सोशल वर्क प्रोजेक्ट इंचार्ज सिस्टर जॉली फ्रांसिस ने दिनांक 17 व 18 जून 2021 को टी.बी. एच.आई.वी. व कोविड-19 पर ट्रेनिंग प्रोग्राम किया। प्रोग्राम की शुरुआत में सिस्टर जॉली फ्रांसिस ने पवित्र बाईबल से एक अध्याय पढ़ा और सभी लोगों को मानसिक शुद्धि का संदेश दिया। इस कार्यक्रम में श्रीमती मॉली जोस, सिस्टर अखिला व अन्य सिस्टर्स भी शामिल हुईं। सिस्टर जॉली के नेतृत्व में सोशल वर्कर स्टाफ ने सोशल डिस्टेन्सिंग को ध्यान में रखते हुए अपने-अपने कार्यक्षेत्र से बुलाये गये लगभग 48 युवक-युवतियों ने हैंड सैनिटाइज़र व मास्क लगवाकर कार्यक्रम में भाग लिया। श्रीमती मॉली जोस ने टी.बी., एच.आई.वी. व कोविड-19 पर विस्तार से जानकारी दी। शिविर में इन बीमारियों के लक्षण, बचाव और इलाज के बारे में सविस्तार बताया गया।

सिस्टर जॉली फ्रांसिस (प्रोजेक्ट इंचार्ज)

Fr. Agnel School & Bal Bhawan, Pocket-F, Beta-II, Greater Noida

Fr. Agnel School, Greater Noida is a Christian Minority School established under Article 30 (1) of the Constitution of India. It is located with large sports facilities of a standard football ground, basketball court etc. Being located in a green area, it is an attractive school for those who would like to grow in a pollution free environment.

With the inception of two pre school and 5 primary classes (class I-V) from Academic Year 2010-2011, Fr. Agnel School, Greater Noida has a great future ahead and is the right choice for students who believe in the ideology of the Agnel Ashram Fathers - It beckons one and all to be part of its great vision of BIG HEARTS AND BRAVE MINDS.

Although run by a Christian Minority, it is established on the solid foundation of National Integration, respect and appreciation of the pluralistic culture of India. It is committed to provide its students the best education available. The school is equipped with the latest technological facilities including specious computer labs, Library, large play grounds, all smart class rooms and School auditorium.

It provides infrastructure and outreach to disadvantaged community children as well as scholarships to several poor children in the School, including around 250 children of leprosy patients, of sex workers, of HIV affected, poor and destitute etc. of Fr.Agnel Balbhawan situated at Greater Noida. The School is maintaining the strength of each class room at 40 students, maximum. The total number of Students currently studying is 1920 students. http://www.agnelgreaternoida.org

Fr. Bento Rodrigues (Manager)
Fr. Agnel School, Greater Noida

में विस्तार से महत्वपूर्ण जानकारी दी गयी। साथ ही सभी को मास्क लगाने के फायदे भी बताये गये। उन्होंने लोगों को कम से कम 20 सेकण्ड तक अच्छी तरह साबुन से हाथ धोने का सही तरीका बताया और संदेश भी दिया। सभी ने ध्यानपूर्वक इन्हें सुना और साथ ही अपनी समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त की।

टी.बी., एच.आई.वी. व कोविड-19 पर ट्रेनिंग प्रोग्राम रखा गया

आगरा, 18 जून। फातिमा हॉस्पीटल, आगरा की मलिन बस्तियों में चल रहे एच.सी.डी.पी.सी. प्रोग्राम के अन्तर्गत फातिमा हॉस्पीटल में सोशल वर्क प्रोजेक्ट इंचार्ज सिस्टर जॉली फ्रांसिस ने दिनांक 17 व 18 जून 2021 को टी.बी. एच.आई.वी. व कोविड-19 पर ट्रेनिंग प्रोग्राम किया। प्रोग्राम की शुरुआत में सिस्टर जॉली फ्रांसिस ने पवित्र बाईबल से एक अध्याय पढ़ा और सभी लोगों को मानसिक शुद्धि का संदेश दिया। इस कार्यक्रम में श्रीमती मॉली जोस, सिस्टर अखिला व अन्य सिस्टर्स भी शामिल हुईं। सिस्टर जॉली के नेतृत्व में सोशल वर्कर स्टाफ ने सोशल डिस्टेन्सिंग को ध्यान में रखते हुए अपने-अपने कार्यक्षेत्र से बुलाये गये लगभग 48 युवक-युवतियों ने हैंड सैनिटाइज़र व मास्क लगवाकर कार्यक्रम में भाग लिया। श्रीमती मॉली जोस ने टी.बी., एच.आई.वी. व कोविड-19 पर विस्तार से जानकारी दी। शिविर में इन बीमारियों के लक्षण, बचाव और इलाज के बारे में सविस्तार बताया गया।

सिस्टर जॉली फ्रांसिस (प्रोजेक्ट इंचार्ज)

Fr. Agnel School & Bal Bhawan, Pocket-F, Beta-II, Greater Noida

Fr. Agnel School, Greater Noida is a Christian Minority School established under Article 30 (1) of the Constitution of India. It is located with large sports facilities of a standard football ground, basketball court etc. Being located in a green area, it is an attractive school for those who would like to grow in a pollution free environment.

With the inception of two pre school and 5 primary classes (class I-V) from Academic Year 2010-2011, Fr. Agnel School, Greater Noida has a great future ahead and is the right choice for students who believe in the ideology of the Agnel Ashram Fathers - It beckons one and all to be part of its great vision of BIG HEARTS AND BRAVE MINDS.

Although run by a Christian Minority, it is established on the solid foundation of National Integration, respect and appreciation of the pluralistic culture of India. It is committed to provide its students the best education available. The school is equipped with the latest technological facilities including specious computer labs, Library, large play grounds, all smart class rooms and School auditorium.

It provides infrastructure and outreach to disadvantaged community children as well as scholarships to several poor children in the School, including around 250 children of leprosy patients, of sex workers, of HIV affected, poor and destitute etc. of Fr.Agnel Balbhawan situated at Greater Noida. The School is maintaining the strength of each class room at 40 students, maximum. The total number of Students currently studying is 1920 students. http://www.agnelgreaternoida.org

Fr. Bento Rodrigues (Manager)
Fr. Agnel School, Greater Noida

Archdiocese At A Glance

First Profession and Jubilee Celebration held at Greater Noida

Greater Noida, 14th April 2021: With profound joy and gratitude to God, the Ursuline Sisters of Mary Immaculate, Nirmala Province, celebrated the First Profession of their 2 Novices - Lovely Bara and Anupa Kerketta and Final Profession of 2 Sisters - Sr. Mamta Mashi and Sr. BinitaMinj on 14th April 2021, Wednesday at 10.30 am at Nirmala Provincialate, Greater Noida.

The Profession Ceremony and the Solemn Thanksgiving Eucharist was officiated by His Grace Most Rev. Dr. Raphy Manjali, Archbishop of Agra and 4 other concelebrants, Fr. Vinoy Pulivelil, Fr. Bento Rodrigues, Fr. K.K.Thomas and Fr. Rogimon.

'Called to be sowers of Prophetic hope', with this theme, the newly and finally professed Sisters took the vows of poverty, chastity and obedience, which are the three evangelical counsels of perfection in religious life.

In his homily, His Grace, well explained the great significance of the religious call "to leave the ordinary lives behind and to enter into a close relationship with Christ." He highlighted that it is precisely this special grace of intimacy that, in the consecrated life, makes possible and even demands the total gift of self in the profession of the evangelical counsels: The leaving of ordinary life (poverty), the grace of intimacy with Christ (chastity), and the total gift-of-self (obedience).

On behalf of the Newly Professed and the Finally Professed sisters, Sr. Mamta Mashi proposed the vote of thanks expressing their deep gratitude towards all those who have been instrumental in helping them reach this graceful occasion of their life. Thereafter, the celebrities of the day were felicitated and the fellowship meal was shared.

फादर मैथ्यु ई.आई. नहीं रहे!

सरधना/मेरठ 2 जुलाई। मेरठ धर्मप्रांत के वरिष्ठ पुरोहित और बहुत से फादर्स के आध्यात्मिक निर्देशक श्रद्धेय फादर मैथ्यु एडाथट्टल का लम्बी बीमारी के उपरांत स्वर्गवास हो गया। वे 92 वर्ष के थे। फादर मैथ्यु का जन्म 21 जनवरी 1929 को केरल में हुआ था। 1 जनवरी 1961 को उनका पुरोहिताभिषेक हुआ था।

3 जुलाई को प्रातः 10 बजे कोविड प्रावधानों को मद्दे नजर रखते हुए सेंट जोसफ कथीड्रल, मेरठ में धर्माध्यक्ष फ्रांसिस कलिस्ट ने उनके दफन-क्रिया की धर्मविधि सम्पन्न कराई। तत्पश्चात उनके शव को पूर्ण सम्मान व धर्मविधि के साथ सेंट लूकस अस्पताल, साकेत, मेरठ के कब्रिस्तान में दफना दिया गया। **ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।**

Fr. Dominic Pinto Lucknow to be the new Regional Youth Director

May 1, 2002. In an online installation ceremony, Rev. Fr. Dominic Pinto of Lucknow Diocese was installed new Regional Youth Director of Agra Region (U.P., Rajasthan & Uttarakhand), by Most Rev. Dr. Oswald J. Lewis, Chairman Bishop of Indian Christian Youth Movement (Agra Region). Youth Directors, Lady Youth Animators and Regional Youth Office Bearers from al 11 Dioceseas were present (online) to mark the occasion.

Rev. Fr. Dominic Geroge, the outgoing RYD, thanked the Chairman all Directors and youth for their whole hearted support during his tenure as RYD. He also thanked and appreciated the hardwork and generous service rendered by RLYD Rev. Sr. Darshana FSLG. Fr. Dominic George took the charge of Regional Youth Office on 14 January 2018. Thus, he completed his term on May 1, 2001. During his tenure, the Youth Ministry in the Region started the following:

- Annual get-together of LOP fruits/products
- Prichay Milan (match making programme)
- Faithbook
- Regional Website
- Ephata, Podcast series and created youth database for the Region.

At present Fr. Dominic Pinto is the Diocesan Youth Director and also the Director of the Pastoral Centre, Lucknow. The AGRADIANCE wishes new RYD God's blessings and best of luck in his ministry.

Rev. Fr. Wilfred Moras is the new Rector of St. Joseph's Regional Seminary, Prayagraj

Prayagraj, 24 June. Rev. Fr. Wilfred Moras, 52, of Lucknow Diocese is been appointed as the new Rector of St. Joseph's Regional Seminary, Prayagraj, U.P. He is replacing the outgoing Father Rector Fr. Ronald Tellis (of Jhansi) who was on the staff for last 11 years and served as Rector for last 5 years.

Rev. Fr. Wilfred was installed here in the Seminary Chapel by the Chairman Bishop Most Rev. Dr. Raphy Manjaly, the Archbishop of Agra. Rev. Fr. A. Sebastian, Vice Rector was also present on the occasion.

Ordained on April 27, 1997 Rev. Fr. Wilfred holds a Masters Degree in English (Lit.) Bachelor's Degree in Education. Besides these he has done Licenticate in Communication from Urbania University, Rome and Doctorate in Missiology. Prior to his present assignment he has served as the Director of Regional Pastoral Centre Nav Sadhana, Varanasi, since 2017-2021.

The Agradiance congratulates him on being appointed Rector of his own 102 years old Alma Mater. We wish him all God's blessings and prayerful support.

Archdiocese at a glance...cont.

Gone, but not forgotten...

Bernie Jackson (St. Mary's Agra) 13.4.21

Glen Scaife (St. Mary's, Agra) 20.4.21

Peter Joseph (Cath.) 14.5.21

Rizarius Anthony Bhai (Cath.) 3.5.21

Rajeev Francis (G. Noida) 8.5.21

Rosy Wales (St. Jude's) 8.5.21

Bp. B. Bhuria (Jhabua) 6.5.21

Fr. Rolfie D'Souza (Allad.) 14.5.21

Fr. Mathew E. I. (Meerut) 2.7.21

Missionaries, worked in the Achchdiocese...

Fr. Varghese K. (CMI), 01.10.20

Fr. T. Emprayil (V.C.) 8.5.21

Fr. Shivaji (SFX) 27.5.21

Sr. Kripa George (CHF) 27.4.21

Sr. Nepunita (M.C.) 6.5.21

Sr. Merly Jose (CMC) 16.5.21

May their souls and souls of all faithful departed rest in peace!

Editorial Team : Fr. E. Moon Lazarus, Fr. Jacob P., Dr. Antony A. P., Mrs. Bernardine Jackson, Mrs. Nishi Augustine

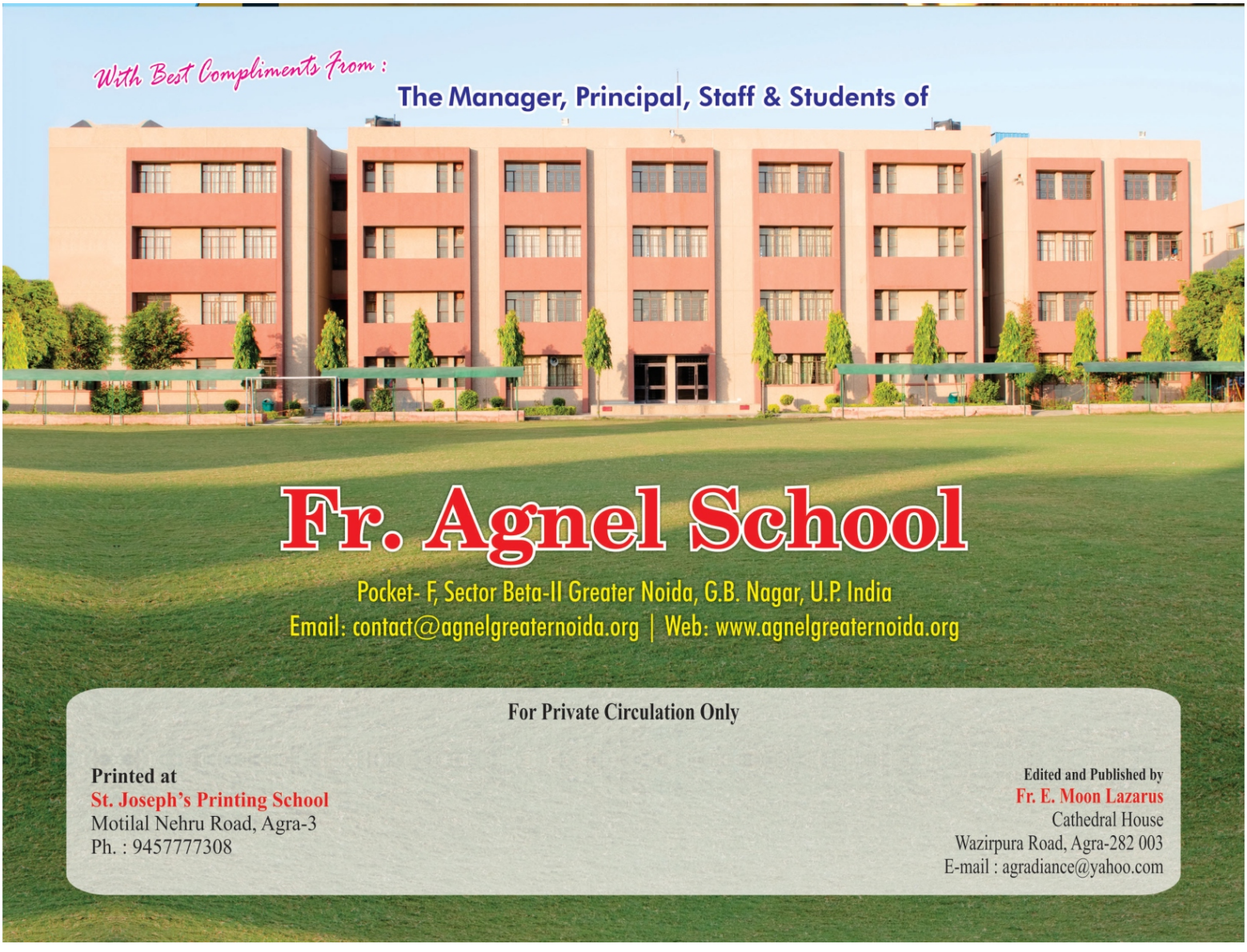

For Private Circulation Only

Printed at
St. Joseph's Printing School
Motilal Nehru Road, Agra-3
Ph. : 9457777308

Edited and Published by
Fr. E. Moon Lazarus
Cathedral House
Wazirpura Road, Agra-282 003
E-mail : agradiance@yahoo.com